धर्म संस्कृति के अग्रदूत

-श्रीराम शर्मा आचार्य

धर्म संस्कृति के अग्रदूत

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१० मूल्य १३.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

❋

लेखक
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

❋

पुनरावृत्ति सन् **२०१०**

❋

मुद्रक
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा, पिन-२८१००३
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो०-९९२७०८६२८९, ९९२७०८६२८७, फैक्स : २५३०२००

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महान धर्मप्रचारक—कुमार जीव

देश से विदेश जाकर जिन विद्वानों ने भारतीय धर्म, सभ्यता एवं संस्कृति का प्रचार ही नहीं किया, बल्कि स्थापना की, उनमें कुमार जीव का नाम सबसे आगे है।

भारत के संबंध चीन से बहुत प्राचीन काल से चले आ रहे थे। यों तो श्रीलंका, बर्मा, जापान, सिंगापुर, हिंदेशिया आदि अनेक देशों में बौद्ध धर्म का प्रचार किया गया। किंतु चीन एक ऐसा देश रहा है, जिसमें केवल अनुयायी के रूप में ही बौद्ध धर्म ग्रहण नहीं किया गया, बल्कि उन दिनों वह एक प्रकार से बौद्ध धर्म का प्रामाणिक केंद्र बन गया था।

इस प्रकार चीन में बौद्ध धर्म के जागरण पूर्ण आंदोलन का प्रमुख श्रेय भारतीय विद्वानों को ही है और उनमें भी कुमार जीव का स्थान सर्वोपरि है।

कुमार जीव का जन्म ईसा की चौथी शताब्दी में हुआ था। इनके पिता का नाम कुमारायण और माता का नाम देवी था। कुमारायण एक रियासत के दीवान पद पर कार्य करते थे। दीवान पद पर कार्य करते हुए उन्होंने शीघ्र ही पद के साथ यश भी प्राप्त कर लिया। सब कुछ होने पर भी कुमारायण को अपने जीवनक्रम से संतोष न था। दीवान के पद पर वे अपनी योग्यता एवं विद्वता का समुचित उपयोग न कर पाते थे। वे अपने वैयक्तिक सुख की अपेक्षा दूसरों को सुखी बनाने में अधिक प्रसन्नता एवं संतोष अनुभव करते थे। पर दीवान के एक प्रतिबंधित तथा उत्तरदायित्वपूर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पद पर रहते हुए वे जनसेवा का कोई काम न कर पाते थे। उन्हें अपने स्वामी राजा की इच्छानुसार जनता से व्यवहार करना पड़ता था जो कि प्राय: शोषण मूलक ही होता था।

कुमार जीव के विद्वान पिता कुमारायण की आत्मा अधिक समय तक यह स्वीकार न कर सकी कि इसी प्रकार दासता करते हुए दुर्लभ मानव जीवन को समाप्त कर दें। अतएव उन्होंने जन-साधारण में ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए अंत:प्रेरणा से दीवानी का पद छोड़ दिया।

नौकरी छोड़कर कुमारायण यात्रा साधनों के अभाव का कष्ट सहते हुए भी अनेक पर्वत तथा वनों को पार करते हुए मध्य-एशिया में तारिम नदी के तट पर बसे, कूची नगर चले गए।

फैलाने को तो ज्ञान का आलोक अपने देश के भी अनेक विस्मृत कोनों में भी फैलाया जा सकता था, किंतु कुमारायण ने विदेश में ही अपना ज्ञान फैलाना इसलिए ठीक समझा कि उस समय भारत में विद्वानों की कमी नहीं थी। अनेक लोग देश की सेवा करने में लगे हुए थे। कुमारायण ने विदेश में भारत के संदेश ले जाकर देश की अंतर्राष्ट्रीय कीर्ति बढ़ाना अधिक श्रेयस्कर समझा।

कूची में कुमारायण एक बौद्ध बिहार में रहकर प्रचार करने लगे। धीरे-धीरे उनकी कीर्ति इतनी फैल गई कि कूची के राजा ने उन्हें अनुरोधपूर्वक अपना राजगुरु बना लिया। कुछ समय बाद कूची राजवंश की 'देवी' नामक एक कन्या से उनका विवाह हो गया, गर्भ से उनके विश्वविख्यात पुत्र कुमार जीव का जन्म हुआ।

कुमार जीव के जन्म के कुछ समय बाद ही उनके पिता की मृत्यु हो गई और पति का प्रचार कार्य पूरा करने के लिए कुमार जीव की माता बौद्ध भिक्षुणी बन गई।

परमात्मा जिसके जीवन में कोई विशेष अभ्युदय-अनुग्रह करना चाहता है, उसकी बहुत सी सुविधाओं को समाप्त कर दिया करता है। इस प्रकार जीवन में कठिनाईयों के आने से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य में कर्मठता का गुण जाग उठता है। वह आलस्य एवं प्रमाद से दूर रहकर परिश्रम करता और भगवद् भय से अधिक से अधिक ईमानदार तथा सत्यपरायण रहने का प्रयत्न करता है। असुविधाओं तथा कठिनाईयों में पड़ जाने से मनुष्य का सारा जीवन परिश्रम एवं पुरुषार्थ पर निर्भर हो जाता है, क्योंकि यदि वह ऐसा न करे तो जीवित नहीं रह सकता। अधिकाधिक परिश्रम का स्वभाव बन जाने से उसमें कर्म वीरता का वह गुण आ जाता है कि उन्नति और सफलताएँ जिसकी अनुगामिनी छाया बनकर रह जाती हैं।

इसके विपरीत जो अधिक सुविधा एवं संपन्नता की परिस्थिति में रहता है, वह स्वभावतः सुकुमार तथा विलासी बन जाता है। प्रमाद और आलस्य उसके मानसिक मित्र बन जाते हैं, जिससे निकम्मा होकर सामान्य कार्यों के योग्य भी नहीं रहता, फिर ऊँचे और बड़े कामों की बात ही क्या?

इसके साथ ही जो व्यक्ति असुविधा एवं कठिनाई के स्वर्ण अवसर को भाग्य का अभिशाप मानकर रोते-झींकते हुए निराशा अथवा निरुत्साह के वशीभूत हो जाते हैं, उनका जीवन तो निकम्मे आलसियों से भी गया गुजरा हो जाता है और वह न केवल अपने पर ही, बल्कि समाज पर एक भयानक भार बनकर जीवन काटते हैं। मनुष्यों को चाहिए कि वह कठिनाईयों को भगवान की कृपा और अभ्युदय का संदेश समझकर अपनाएँ तथा उनसे प्रेरणा लेकर जीवन को उन्नत एवं उदात्त बनाएँ।

बौद्ध भिक्षुणी हो जाने पर भी कुमार जीव की बुद्धिमती माता यह न भूली कि उनके सम्मुख कुमार जीव है, जिसे उनको हर प्रकार से योग्य बनाकर समाज एवं संसार की सेवा के लिए समर्पित कर देना है। अतः पुत्र की शिक्षा के लिए कुमार जीव की माता उन्हें कश्मीर ले गईं कश्मीर उस समय विद्या का बहुत बड़ा केंद्र माना जाता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कश्मीर पहुँचकर 'देवी' ने अपने पुत्र कुमार जीव को बंधुदत्त नामक एक बहुत बड़े कश्मीरी विद्वान की संरक्षता में विद्याध्ययन के लिये छोड़ दिया। बंधुदत्त जितने बड़े विद्वान थे, उतने ही शिष्य बनाने में कृपण थे। उन्होंने अपने जीवन में बहुत ही कम शिष्य बनाए और जिनको बनाया उनको फिर पराकाष्ठा का पंडित ही बना दिया। इसलिए वे शिष्य बनने के इच्छुक व्यक्तियों की कड़ी परीक्षा लेकर पहले परख लिया करते थे कि इसमें बोये हुए विद्या के बीज अंकुरित भी होंगे अथवा नहीं! निरर्थक एवं लंठ शिष्यों के साथ सिर मारने के लिए फजूल समय उनके पास न था।

उन्होंने अपने नियमानुसार बालक कुमार जीव को भी नहीं छोड़ा और उनके चरित्र, गुण, कर्म, स्वभाव में जमे बीजांकुरों को कड़ाई से जाँचा। जब बालक गुरु की कसौटी पर खरा उतरा तो उसकी शिक्षा-दीक्षा में पूरी तत्परता दिखाने में कोई कसर न रखी।

कठोर गुरु जब सुयोग्यताओं से प्रसन्न होता है, तब शिष्य को पढ़ाता क्या, वास्तव में ज्ञानालोक के रूप में स्वयं उसकी आत्मा में बैठ जाता है। पितृहीन बालक कुमार जीव के भाग्य खुल गए। कुछ ही समय में बंधुदत्त ने उसको संस्कृत भाषा तथा बौद्ध दर्शन का प्रकांड पंडित बना दिया।

कश्मीर से वापस आकर कुमार जीव काशगर पहुँचे और बुद्धियश नामक एक विद्वान के साथ मिलकर बौद्ध दर्शन को पुनः दोहराया तथा ज्ञान को पूर्ण रूपेण असंदिग्ध बनाकर अपने जन्म स्थान कूची चले आए। यद्यपि कश्मीर में ही कुमार जीव के पांडित्य की ख्याति इतनी फैल गई थी कि तुर्किस्तान से आ-आकर बहुत से लोग उनके शिष्य बनकर बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने लगे थे। किंतु वहाँ से चले आने में उनके दो उद्देश्य थे। एक तो यह कि कश्मीर में गुरु के सम्मुख अपनी प्रतिष्ठा नहीं कराना चाहते थे और दूसरे वे अनेक स्थानों पर भ्रमण करते हुए कूची जाकर अपने पिता का ध्येय पूरा करना चाहते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किंतु कूची में वे अपना उद्देश्य प्रारंभ भी न कर पाए थे कि कूची नरेश और चीन के सम्राट में लड़ाई हो गई जिसमें कूची का पतन हो गया। फलस्वरूप कूची का राज्य चीन साम्राज्य में मिला लिया गया। चीनी जिन बहुत से लोगों को बंदी बनाकर ले गए उनमें कुमार जीव भी थे। किंतु उनके प्रकांड पांडित्य तथा चीन में फैली हुई उनकी कीर्ति ने उन्हें प्राण दंड से बचा लिया। किंतु फिर भी उन्हें 'लिहांग चो' प्रदेश में गवर्नर की देख-रेख में अठारह वर्ष के लिए नजरबंद कर दिया गया।

कुछ समय बाद जब उनकी लोकप्रियता के दबाव से उन पर से प्रतिबंध उठा लिया गया, तब उन्होंने अपना प्रचार कार्य प्रारंभ कर दिया। कुमार जीव की नई व्याख्याओं और नए दृष्टिकोण से बौद्ध धर्म में एक नवीनता आ गई। अभी तक बौद्ध धर्म के जिन ग्रंथों का अनुवाद चीनी भाषा में हुआ था, वह न तो सरल था, न सुंदर और न समीचीन। अत: कुमार जीव ने बौद्ध ग्रंथों का ठीक-ठीक अनुवाद करने का काम अपने हाथ में ले लिया। इसे पूरा करने के लिए उन्होंने चीनी भाषा का अध्ययन प्रारंभ किया और शीघ्र ही उस पर अधिकार प्राप्त कर लिया।

उन्होंने महायान की उपशाखा 'सर्वास्तिवाद' के लगभग सौ ग्रंथ चीनी भाषा में अनुवादित किए, जिनमें से 'विनय पिटक', 'योगाचार भूमि शास्त्र,' 'ब्रह्म जाल सूत्र' 'महाप्रज्ञा पारिमिता-सूत्र,' 'देशभूमि' 'विभाषा शास्त्र,' 'सूत्रालंकार शास्त्र' विशेष महत्त्व के हैं। इसमें से महाप्रज्ञा पारिमिता सूत्र का अनुवाद तो उन्होंने तीन वर्ष के अविरत परिश्रम के साथ किया था। इसके अतिरिक्त उन्होंने चीन में प्रचलित धर्म 'ताओ' की बुद्ध दर्शन के आलोक में व्याख्या की।

इतना अनुवाद कार्य करने के साथ ही उन्होंने भाषणों, प्रवचनों तथा विचार-विनिमय के द्वारा बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय का धुआँधार प्रचार किया। उनके भाषण इतने ज्ञानपूर्ण एवं प्रभावशाली होते थे कि अच्छे-अच्छे विद्वान उनसे नतमस्तक हो जाया करते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थे। कुमार जीव के अनेक शिष्य सहयोगी तथा सहायक विद्वानों में से विमलाक्ष तथा पुण्यत्रात के नाम बहुत प्रसिद्ध हैं। इन दोनों ने अनुवाद कार्य में कुमार जीव को बहुत सहयोग दिया था।

कुमार जीव ने चीन में भारतीय बौद्ध धर्म की 'महायान' शाखा के सिद्धांतों का प्रचार करने में अपना पूरा जीवन लगा दिया। जीवन में एक दिन के लिए भी बैठकर उन्होंने अपने व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं के विषय में नहीं सोचा। कूची की पराजय के समय गिरफ्तार होने पर उन्होंने न किसी प्रकार का भय माना और न शंका की। उन्हें अपनी उस विद्या पर अखण्ड विश्वास था जिसे कि उन्होंने जीवन के सारे सुख छोड़कर प्राप्त किया था। वे जानते थे कि उनकी विशाल विद्या, किसी भी दशा में मित्र की तरह उनकी सहायता करेगी और हुआ भी यही। बंदी की दशा में भी उनका ज्ञान प्रकाश छिटक-छिटक कर बाहर फैलने लगा। जिसने चीन के निवासियों को इस सीमा तक आकर्षित किया कि सरकार को उन पर लगे प्रतिबंधों को ढीला करना पड़ा।

यदि कुमार जीव के पूरे जीवन पर दृष्टिपात किया जाए तो पता चलेगा कि उनका संपूर्ण जीवन ही काम का दूसरा नाम था। उनका कर्त्तव्य था तो अपना काम, उनका सुख था तो अपना कर्त्तव्य, उनका मनोरंजन था तो काम करते रहना और उनका धर्म था तो अपना कर्त्तव्य कर्म। वे यह भी न जानते थे कि बिना किसी काम के बेकार कैसे बैठा जाता है? यदि कुमार जीव जैसे कर्त्तव्यवानों के नाम के साथ क्रियाहीनता, आलस्य, प्रमाद, गप-शप, हास-विलास, घूमा-फिरी और टल्लेनवीसी आदि शब्द एक पंक्ति में रखे जाएँ तो यह शब्द इतने विजातीय विदित होंगे कि बिना हटाए मन को चैन नही मिल सकता। यह निर्जीव शब्द उनके नामों के साथ स्वयं झेंपते से दीखेंगे। आज तक भी समय एवं जीवनीशक्ति को निरर्थक कार्यों में व्यय करने वाला कोई भी व्यक्ति संसार में कोई ध्यानाकर्षक काम नहीं कर सका।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिन्होंने कर्त्तव्य का आनंद परख लिया है, परिश्रम का स्वाद चख लिया है, उन्हें काम के सिवाय न तो किसी में आनंद आ सकता है और न आराम मिल सकता है।

बौद्ध धर्म के माध्यम से विदेश में भारतीयता का गौरव बढ़ाने वाले कुमार जीव का जीवन बहुत ही सादा तथा सरल था। उनके उपदेशों में एक वाक्य भावनात्मक रूप में अवश्य रमा रहता था कि मेरे काम को अपनाओ लेकिन मेरे जीवन को यथावत आदर्श बनाकर अनुकरण मत करो, कमल कीचड़ में पैदा होता है। कमल को प्यार करो, कीचड़ को नहीं।

निस्पृह कुमार जीव ने संसार को बहुत कुछ दिया, किंतु उन्होंने अपने बारे में कहीं कुछ भी नहीं लिखा। उनका परिचय किसी ग्रंथ में नहीं मिलता, क्योंकि अपने विषय में बहुत कुछ कहने को वे अहंकार का एक स्वरूप मानते थे। उनका कहना था कि अच्छे कार्यों द्वारा संसार की सेवा करना तो मनुष्य का सामान्य कर्त्तव्य है फिर उसके लिए परिचय अथवा प्रशस्ति की क्या आवश्यकता? संसार को लाभ तो हमारे विचारों से होगा न कि हमारे व्यक्तिगत परिचय से। अपने नाम का लोभ लेकर जो काम किया करते हैं, वे वास्तव में स्वार्थी होते हैं, परमार्थी नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाखंड विडंबना के प्रबल शत्रु संत कबीर

संत कबीरदास के जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत और उसके बाद की कई चमत्कारी किंवदंतियाँ हैं। वे कितनी सच हैं और कितनी मनगढ़ंत—इसकी चर्चा तो अनावश्यक है, परंतु यह सच है कि मध्य काल में ऐसे चमत्कारों, अंधविश्वासों और मुल्ला पंडितों द्वारा निर्मित अंध परंपराओं से लेकर सामाजिक कुरीतियों पर जितना घातक प्रहार कबीरदास ने किया, उतना शायद ही किसी संत या आध्यात्मिक विभूति ने किया हो।

उनकी दृष्टि में जाति-पाँति, कुल, वंश, परिवार और पद-प्रतिष्ठा नहीं व्यक्ति का व्यक्तित्व और आंतरिक निष्ठा ये ही अधिक महत्त्वपूर्ण थीं। वस्तुतः संत या साधारण इनसान में अंतर जानने के लिए परख की कसौटी है भी यही। उच्च ब्राह्मणों और राजकुलों में जन्म लेने वाले व्यक्ति का स्तर भी निम्न और पतित हो सकता है तथा निम्न कुल के उपेक्षित और पिछड़े वंश परिवार में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी अपनी आंतरिक श्रेष्ठता के कारण संत, महात्मा और देव- पुरुषों की पंक्ति में जा बैठ सकता है। उस समय जब कबीर का जन्म हुआ तो लोक संसार के साथ अध्यात्म जगत में भी यही मान्यता स्थापित की हुई थी। समाज और राजपरिवार में तो प्रगति और श्रेष्ठता का आधार जाति या वंश था ही, आध्यात्मिक क्षेत्र में भी साधना और आत्मकल्याण का अधिकार उच्च कुल के व्यक्तियों को ही दिया गया। समाज में इस परंपरा का इतना दुष्प्रभाव नहीं पड़ता जितना कि अध्यात्म क्षेत्र में, क्योंकि इससे तो व्यक्ति के विकास की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संभावनाएँ ही नष्ट हो जाती हैं। इसलिए संत कबीरदास ने सर्वप्रथम इस मान्यता को तोड़ा कि 'जाति न पूछो साधु की पूछ लेउ बस ज्ञान।'

ऐसी कुरीतियाँ भी प्राय: चिरपोषित अंधविश्वास के परिणाम-स्वरूप जन्म लेती हैं।

स्वयं कबीरदास के कुल और वंश का कोई पता नहीं चल सका है। जहाँ तक उनके संबंध में पता चला है कि उनका पालन-पोषण नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपति ने किया था। अधिकांश लोगों की मान्यता है कि इन दंपति को काशी के लहरतारा तालाब के तट पर एक बालक पड़ा मिला था। वे नि:संतान थे— स्वाभाविक ही उनके मन में इस अनाथ शिशु के प्रति ममत्व जागा और वे इसे उठाकर अपने घर ले आए तथा बेटे की तरह पालन करने लगे। यहीं कबीर बड़े हुए और अपने अभिभावक माता-पिता के पेशे में लग गए।

काशी जैसा पवित्र तीर्थ स्थल। उन दिनों काशी में एक से एक पहुँचे हुए सिद्ध महापुरुष थे, जिनकी जीवन वाटिका में धर्म साधना और ईश्वर उपासना की कला से विकसित पुष्पों की सुगंध महानगरी में फैली हुई थी। स्वामी रामानंद जैसे वैष्णव संत भी वहीं निवास करते थे और वहाँ की जनता पर उनका अनूठा प्रभाव था। क्या हिंदू, क्या मुसलमान सभी के मन में उनके प्रति अगाध श्रद्धा थी। नीरू जुलाहा भी उनके प्रति श्रद्धावनत् था और इन नियोजित माता-पिता की श्रद्धा-भावना कबीर को उत्तराधिकार में मिली।

संत कबीर जब थोड़े बड़े हुए तो उनके अंत:करण में आरोपित ईश्वर की भक्ति की बेल भी फलने-फूलने लगी। हृदय में तीव्र आकांक्षा थी कि स्वामी रामानंद से ईश्वर भक्ति की—उपासना, साधना की दीक्षा ली जाए। परंतु असमंजस यह था कि जुलाहा परिवार का सदस्य और जाति से मुसलमान होने के कारण कहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामी जी मना न कर दें, अनधिकारी घोषित न कर दें और यदि यह आशंका सच निकली तो उन्हें अपना गुरु मानने की आशंका धूल-धूसरित हो जाएगी।

इस संभावना को दृष्टिगत रखते हुए कबीर ने एक ऐसा उपाय सोचा, जिससे यह संभावना भी न रहे और स्वामीजी के शिष्यत्व की पात्रता भी मिल जाए। स्वामी रामानंद प्रातःकाल ब्राह्म-मुहूर्त में गंगा स्नान के लिए जाया करते थे। कबीर को यह पता चला तो वे आधी रात को ही उसी घाट पर जा बैठे तथा स्वामीजी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे। सूर्योदय होने में कोई एक पहर ही बाकी रहा होगा, तब स्वामी जी आए और कबीरदास उनके आने से पूर्व ही घाट की सीढ़ियों पर लेट गए।

अंधकार के कारण स्वामीजी न देख पाए और उनका पाँव कबीर की देह पर रख गया। जैसे ही उन्हें यह लगा कि पाँव के नीचे कोई दब रहा है, वे एक दम राम-राम कहते हुए उछले और इधर कबीर भी उठ बैठे। बड़ी प्रसन्नता से उन्होंने स्वगत कहा— 'मिल गया। अब कोई चिंता नहीं।'

स्वामीजी ने विस्मित हो पूछा-'क्या मिल गया।'

'में जाति का जुलाहा हूँ और आप से गुरुदीक्षा चाहता हूँ। सो मुझे गुरुमंत्र मिल गया।'

'गुरुदीक्षा ही लेनी थी तो मुझसे कहना था। इस प्रकार लेटने से क्या लाभ मिला। '

कबीर ने कहा—'मैं सोचता था। कहीं मुसलमान होने के कारण मुझे दीक्षा का अनधिकारी न कह दें।'

लोक व्यवहार में परिणाम विपर्यय की संभावना से सावधान रहते और चातुरी बरतते देखा है, परंतु धर्म और आध्यात्म का क्षेत्र भी इतना संदिग्ध है कि मुमुक्ष को पहली सीढ़ी पार करने के लिए यह मार्ग अपनाना पड़ा। स्वामीजी ने अपने इस विचित्र शिष्य को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गले से लगा लिया और उन्हें लगा कि जिस प्रतिभा संपन्न शिष्य की तलाश थी वह मिल गया है।

धर्म के क्षेत्र में पनप रहे छल-कपट धूर्त व्यवहार से स्वामीजी भली-भाँति विज्ञ थे। उसे निर्मूल करने के लिए कबीर श्रेष्ठ भूमिका निभा सकेंगे—प्रथम भेंट में ही उन्होंने जान लिया और कबीर को धर्म तथा अध्यात्म के सिद्धांतों का ज्ञान कराने के साथ-साथ साधना मार्ग पर भी आरूढ़ किया।

स्वयं को ईश्वर से भी अधिक गुरु का उपकृत मानने वाले कबीर की श्रद्धा इन पंक्तियों में मुखरित हुई है—

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पांय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय ॥

वे कैसे साधु-महात्माओं के विरोधी हो सकते हैं? फिर वे साधु-पंडित, काजी, मुल्लाओं के उस वर्ग के सबसे बड़े और प्रबल शत्रु थे, जिन्होंने अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिए धर्म के पुण्य क्षेत्र को विकृतियों से दूषित किया। जनसाधारण को कल्याण और सुख-शांति के मार्गदर्शन के स्थान पर जनमानस में अंधविश्वास, पतन, हिंसा और अन्य व्यक्तिगत विकृतियों तथा सामाजिक कुरीतियों के विषबीज बोए।

कबीर समाज में ऐसे वर्ग से उठकर आए जिसे अभी तक विद्या-बुद्धि प्रगति के क्षेत्रों में आगे बढ़ने का अवसर ही नहीं मिला था। उस वर्ग को अमानव या पशु का दर्जा दिया गया था। उस समय के कई पंडितों और काजियों ने तो इस वर्ग को जड़ भी घोषित कर रखा था। ऐसे वर्ग और समुदायों की कुंठाओं या प्रतिक्रियाओं ने कबीर जैसे विद्रोही को जन्म दिया तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है? कुछ लोग कबीर को हठवादी और पूर्वाग्रही सिद्ध करने पर आज भी तुले हैं। परंतु यह मान्यता अपने आप में एक पूर्वाग्रह है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस समय समाज की तंद्रा तोड़ने के लिए यह आवश्यकता थी कि प्रचलित विश्वासों, मान्यताओं और प्रतीकों पर तीव्र प्रहार किया जाय। उन्हें तोड़े बिना जनता की निष्ठाएँ और आस्थाएँ सच्चे धर्म के प्रति उद्‌भूत ही नहीं हो सकतीं थीं। कबीर ने इस मर्म को गंभीरता से समझा, अपनी पैनी दृष्टि से देखा और अपनी तीखी शैली में कह दिया। धर्मतंत्र और अध्यात्म की स्थापना साधु-संतों की महिमा और शाश्वत सिद्धांतों के जीवन मूल्यों की अवहेलना करने पर संभव नहीं है। इस तथ्य को कबीर की नस-नस में बहता हुआ देखा जा सकता है। साधना, उपासना, चरित्र, सद्‌गुण, सत्य, प्रेम, गुरु, शास्त्र, दर्शन आदि के प्रति अगाध श्रद्धा व्यक्त करने में, आवश्यकता प्रतिपादित करने में कबीर अपने समय के सभी विद्वानों से आगे निकल गए।

संत कबीर ने अपने समय में प्रचलित पाखंड और अंधविश्वास का ही खंडन नहीं किया वरन उस समय की कई सामाजिक कुरीतियों और परंपराओं को भी नहीं बखसा। जाति-पाँति से लेकर मुसलमान तक, और बाह्य चिन्ह पूजा से लेकर पशुबलि के अंधविश्वास तक कोई भी विकृति उनके आक्रमण से बच नहीं सकी। निस्संदेह ऐसी प्रवृत्तियाँ संबंधित नेतृत्व में निहित स्वार्थ की भावना पनपने के कारण आती हैं। इन परंपराओं और मान्यताओं पर प्रहार होते देखकर स्वार्थी तत्त्वों का कुपित होना स्वाभाविक ही है और संत कबीर को ऐसों का कोपभाजन बनना भी पड़ा परंतु उन्होंने अपना मार्ग नहीं छोड़ा।

तत्कालीन शासक सिकंदर लोदी ने उन्हें तरह-तरह से उत्पीड़ित किया। शारीरिक यातनाओं से लेकर मरणासन्न कष्ट देने तक कोई उपाय नहीं छोड़ा। परंतु अंतर्निहित जाग्रत आत्मदेव की शक्ति क्षमता ने उनका सदैव बचाव किया। एक बार तो उन्हें गंगा तक में फेंक दिया गया। पर सिद्धांतों और आस्था-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निष्ठाओं के धनी कबीर ने जीवन मूल्यों को ही अधिक महत्त्व दिया।

उनके व्यक्तिगत निजी जीवन की ओर दृष्टिपात करने पर तो सर्वाधिक विस्मित रह जाना पड़ता है। कुलहीन व्यक्ति ने और वह भी अनपढ़ जिसकी उँगलियों ने कभी कागज और कलम को छुआ तक नहीं, कैसे इतना साहित्य सृजन किया? अपने व्यक्तित्व में कहाँ से इतनी प्रभावकारी क्षमता अर्जित की? जिसने क्या मुल्ला-मौलवियों से नियंत्रित मुगल साम्राज्य और क्या हिंदू धर्म की पंडा पुरोहित नियंत्रित व्यवस्था की जड़ें हिला दीं। कबीर के कई-कई दोहे ऐसे हैं, जिनका अर्थ आज तक नहीं खोजा जा सका है। उनकी उलटवासियाँ तो शोध छात्रों का प्रिय विषय बनी हैं, उन पर शोध प्रबंध लिखकर ही वे अपनी योग्यता तथा विद्वत्ता को प्रमाणित करते हैं। कबीर के व्यक्तित्व की इस समृद्धि और संपन्नता की ओर देखने पर अध्यात्म तथा धर्म की जीवन विद्या में निहित शक्ति जागरण की महानतम संभावनाओं को स्वीकार करना ही पड़ता है।

समाज में उनका प्रभाव और अनुयायियों की एक बड़ी संख्या होते हुए भी कबीर ने जुलाहों का सा घर का पेशा अपनाया। वे एक साधारण गृहस्थ की तरह जिये। लोई जो उनकी धर्मपत्नी थीं ने दो बच्चों को भी जन्म दिया। पारिवारिक उत्तरदायित्वों के होने पर भी कबीर की मस्ती और सेवा-साधना में कोई अंतर नहीं आया। समाज में व्यापक परिवर्तन के सूत्रधार बनकर भी-अहर्निश इन प्रवृत्तियों और गतिविधियों में संलग्न रहकर भी कबीर ने अन्य साधु-संन्यासियों की तरह कभी भिक्षा या दान नहीं लिया। इस मार्ग के अन्य पथिकों को भी उन्होंने सदैव यही प्रेरणा दी—

साधू संग्रह ना करे, उदर समाता लेय।
आगे पीछे हरि खड़े, जो मांगो सो देय॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और—

जो जल बाढ़ै नाव में, घर में बाढ़ै दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सज्जन कौ काम॥

इस आदर्श को लेकर जीने वाले व्यक्ति ही अपने जीवन में समाज सेवा के लिए नवनिर्माण के लिए, कुछ कर पाने में समर्थ होते हैं। अन्यथा जीवन स्त्री-बच्चों के लिए विलास सुविधाएँ जुटाने में ही बीत जाता है। १२० वर्ष की आयु में संत कबीर का देहांत सन् १५१८ ई० में हुआ। अपने अंतिम समय में वे मगहर चले गए थे, क्योंकि लोगों की मान्यता थी मगहर में मरने वाला व्यक्ति नरक को जाता है। मरने के बाद भी अंधविश्वास टूटे, इसके लिए कबीर कितने यत्नशील थे?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वेदांत को अपने जीवन के माध्यम से सिखाने वाले—स्वामी रामतीर्थ

घटना सन् १९०१ की है। मथुरा में एक धर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन के आयोजक आचार्य शिवगण ने सभी धर्मों के प्रतिनिधि विद्वानों को आमंत्रित किया पर सम्मेलन का अध्यक्ष बनाया स्वामी रामतीर्थ को, जिनका न कोई मठ था और न कोई आश्रम। तीसरे दिन की बात है कि ईसाई धर्म के प्रतिनिधि फादर स्काट ने अपने धर्म का विवेचन करते हुए हिंदू धर्म पर कुछ भौंडे आक्षेप किए। श्रोतागणों में क्षोभ उत्पन्न हो गया, लोग शोर मचाने लगे, पर स्वामीजी ने सबको शांतिपूर्वक बैठे रहने का आग्रह किया।

फादर स्काट जब अपना भाषण समाप्त कर चुके तो स्वामी रामतीर्थ उठे और उन्होंने फादर स्काट के आक्षेपों का इतना नम्र-समाधान किया कि पादरी स्काट को बड़ी लज्जा अनुभव हुई और उन्होंने अपनी गलती स्वीकार की तथा उपस्थित जनसमुदाय से क्षमा माँगी। यह प्रभाव स्वामीजी की वाणी से अधिक उनके व्यक्तित्व का था। अन्यथा सैकड़ों लोग हैं जो अपने वाक्चातुर्य से लोगों को हतप्रभ करते हैं, पर उनकी वाणी का जरा भी असर नहीं पड़ता। स्वामीजी की स्वयं यह मान्यता रही है। 'जितना तुम बोलते हो उससे ज्यादा तुम्हारा व्यक्तित्व सुना जाता है' और स्वामीजी ने वेदांत को जो तब तक चर्चा और परिसंवाद का ही विषय समझा जाता था, अपने जीवन और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचरण में उतारकर निज के व्यक्तित्व को इतना तेजस्वी तथा प्रखर बना लिया था कि उसके आगे हर कोई नतमस्तक हो उठता था।

स्वामी रामतीर्थ का जन्म उत्तरी सीमा प्रांत में स्थित गुजरावाला जिले के मुरली वाला गांव में २२ अक्टूबर १८७३ ई० को हुआ। उनके पिता का नाम हीरानंद था और बालक का नाम रखा गया तीर्थराम। तीर्थराम का जन्म होने के कुछ माह बाद ही उनकी माँ का देहांत हो गया। परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ही साधारण थी। अत: उनको उच्च शिक्षा नहीं दिला सकी। जब तक ये गाँव में रहे, तब तक वहाँ के एक मौलवी से उर्दू पढ़ते रहे।

परिवार की आर्थिक स्थिति भले ही दयनीय हो, पर हीरानंदजी की यह आकांक्षा थी कि अपने पुत्र को पढ़ा-लिखाकर योग्य बनाएँ, इसीलिए उन्होंने नौ वर्ष की आयु में तीर्थराम को अपने एक मित्र धन्ना भगत की देख-रेख में शहर में रख दिया और हाईस्कूल में भरती करवा दिया। भगत धन्ना कसरती पहलवान थे और अविवाहित थे, साथ ही अध्यात्म में भी उनकी रुचि थी। तीर्थराम उनसे धर्म और अध्यात्म आदि विषयों पर चर्चा करते रहते थे, धन्ना भगत के सान्निध्य का तीर्थराम पर बहुत प्रभाव पड़ा।

पंद्रह वर्ष की आयु में तीर्थराम ने एण्ट्रेंस की परीक्षा पास की और पंजाब भर में प्रथम आए। इस सफलता ने प्रतिभा को प्रमाणित किया और परीक्षा बोर्ड ने उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्ति दी। लेकिन हीरानंद जी तीर्थराम को और अधिक पढाना नहीं चाहते थे। तीर्थराम ने अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध आगे पढ़ाई जारी रखने का निश्चय किया और कालेज में भरती हो गए। कालेज की पढ़ाई के लिए स्कूली खरचा और भोजन-वस्त्र के व्यय का प्रबंध तो आवश्यक था, वह कहाँ से पूरा हो? तीर्थराम ने इसका सहज रास्ता निकाल लिया। उन्होंने छात्रवृत्ति से स्कूल की फीस और पुस्तक आदि का खरचा चलाने का निश्चय किया तथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भोजन-वस्त्र के लिए टयूशन द्वारा खरचा चलाने का रास्ता निकाल लिया। अपनी मर्जी के खिलाफ कालेज में भरती होने के कारण हीरानंदजी ने तो उन्हें कोई भी किसी भी तरह की मदद न करने की ठान ली थी। पर तीर्थराम जी की आवश्यकताएँ थी ही कितनी जिन्हें पूरा करने के लिए ज्यादा परिश्रम करना पड़े। अतः वे अपना काम बड़ी मितव्ययता तथा सादगी से चलाते रहे। उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को इस स्तर का रखा जो आसानी से पूरी हो सकती थीं। कदाचित कभी कोई कमी पड़ती भी तो वे उसे बड़ी सूझ-बूझ के साथ निभा लेते थे। इस तरह की कई घटनाओं का उल्लेख उनके जीवनी लेखकों ने किया है, जिनसे विदित होता है कि घोर अभाव के दिनों में भी वे अपने आप को किस प्रकार परिस्थितियों के अनुरूप ढाल लेते थे? उनकी आमदनी औसतन तीन पैसे रोज थी और उसी में वे संतोषपूर्वक गुजारा कर लेते थे। लाहौर जैसे शहर में तीन पैसे रोज पर गुजारा करना बड़ा ही कष्ट-साध्य था। वे सुबह के वक्त एक दुकान पर दो पैसे की रोटी खरीद लेते। दाल मुफ्त में मिलती थी। उसी से काम चल जाता था। कुछ दिन तो इसी तरह बीत गए पर बाद में दुकानदार ने अपना नियम बदल दिया और तीर्थराम से कह दिया कि दाल मुफ्त नहीं मिल सकती। इस पर विवश होकर तीर्थराम ने शाम का खाना बंद कर दिया और सुबह एक वक्त ही भोजन करने लगे। उनके पास कड़ाके की सरदी में भी पहनने के लिए कोट नहीं था, न ही पतलून और न नेकटाई ही थी। पहनने के लिए केवल खद्दर की एक कमीज और एक पायजामा भर था।

पैरों में साधारण से देशी जूते थे। एकबार वे किसी दुकान से कुछ सामान खरीद रहे थे। सामान खरीदकर दुकान से उतर ही रहे थे कि पाँवों से एक जूता खिसक गया और नाली में गिर पड़ा। नाली गहरी थी और उसमें काफी पानी था सो जूता उसमें डूबकर बह गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्द्वंद भाव से तीर्थराम एक जूता हाथ में लिए घर आए और उन्होंने बेमेल का दूसरा जूता दूसरे पाँव में डालकर काफी दिनों तक काम चलाया। इस हालत में देखकर तीर्थराम के कई सहपाठी उनकी हँसी उड़ाते थे पर तीर्थराम को इसकी कोई परवाह नहीं थी। बाद में जब उनके पास पैसे आ गऐ तो उन्होंने नए जूता खरीदे।

इस प्रकार तपोमय जीवन व्यतीत करते हुए ही तीर्थराम बड़ी लगन के साथ पढ़ते रहे। सभी वर्ग की परीक्षाओं में वे सदा प्रथम ही आते रहे, पर अपनी योग्यता का लाभ अपने लिए उठाने की उनमें जरा भी भावना नहीं थी। जब वे एम० ए० की परीक्षा का फार्म भर रहे थे तो कालेज के अंगरेज प्रिन्सीपल ने उनकी सच्ची लगन, योग्यता और प्रतिभा से प्रभावित होकर एक दिन तीर्थराम से कहा—"क्या मैं आपका नाम आई० सी० एस० (इण्डियन सिविल सर्विस) की परीक्षा के लिए भेज दूँ।"

तीर्थराम कुछ समय तक विचारमग्न रहे। उनकी आँखों में आँसू भर आए और डबडबती आँखों से ही बोले—"मैने इतनी मेहनत से ज्ञान का जो खजाना पाया है, उसे धनवान बनने के लिए खरच नहीं करना चाहता। उच्च पदों पर आसीन रहकर मैं अपनी इस प्रतिभा का क्या उपयोग करूँगा? मैंने तो यह ज्ञान इसलिए कमाया है कि इस दौलत को बाँटकर अपने आप को तथा अन्य औरों को भी सुखी बनाऊँ।"

"तो एम० ए० पास करने के बाद क्या करोगे"—तीर्थराम से प्रिन्सीपल ने पूछा। वे अपने इस होनहार शिष्य के इन विचारों को सुनकर न केवल आश्चर्यचकित रह गये थे, वरन बेहद प्रभावित भी हुए थे।

प्रिन्सीपल का यह प्रश्न सुनकर तीर्थराम ने कहा—"यदि कोई विचार है तो यही कि अपना सारा जीवन और हर एक श्वास प्रभु की सेवा में लगा दूँ तथा मानव मात्र की सेवा करता रहूँ।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामी रामतीर्थ के अंत:करण में सच्चा सेवाभाव था और जन-सेवा की उत्कट लगन थी। विद्यार्थी जीवन में उन्होंने तप-साधना तथा कठोर व्रतों को निभाना आरंभ कर दिया था। शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने कालेज में अध्यापन कार्य अपनाया। साथ ही उन्होंने सार्वजनिक जीवन में भाग लेना भी आरंभ कर दिया। सन् १८९६ ई० में लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। तीर्थराम जी भी उसमें शामिल हुए और उन्होंने बड़े-बड़े नेताओं के भाषण सुने, पर उन्होंने अनुभव किया कि भाषणों से देश का कोई उद्धार नहीं हो सकता। इन्ही दिनों भारत के सामाजिक और धार्मिक क्षितिज पर स्वामी विवेकानंद का अवतरण हुआ। तीर्थरामजी स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व तथा कृतित्व से बहुत प्रभावित हुए और उनके संपर्क में आकर उन्होंने भी अध्यात्म के प्रयोगों को ही अपना लक्ष्य बना लिया।

एक दिन वे अपने साथ बिना कोई सामान लिए घर से निकले और उत्तराखंड के जंगलों में चल पड़े। काफी दिनों तक उन्होंने उत्तराखंड के वन प्रांतों का भ्रमण किया। वहाँ की जलवायु का उन पर विपरीत प्रभाव हुआ। इस भ्रमण के दौरान ही उनका नारायण स्वामी से साक्षात्कार हुआ। नारायण स्वामी ने अपने युग के इस विभूतिवान व्यक्तित्व को पहचाना और शिष्यभाव से स्वामी रामतीर्थ की सेवा सुश्रूषा करने लगे। इन्हीं नारायण स्वामी ने स्वामी रामतीर्थ के देहांत के बाद उनके विचारों के व्यापक प्रचार-प्रसार का कार्य सँभाला तथा उनके प्रयासों से ही देशभर में स्वामी रामतीर्थ के भाषण और उपदेश विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित हो सके थे।

सन् १९०१ ई० में मथुरा में धर्म सम्मेलन हुआ। स्वामी रामतीर्थ इस धर्म सम्मेलन के अध्यक्ष बनाए गए। उन्होंने जिस कुशलता से सम्मेलन का संचालन किया। यह प्रस्तुत लेख के प्रारंभ की पंक्तियों में बताया जा चुका है। धर्म सम्मेलन संपन्न हो चुकने के बाद उन्होंने मथुरा में कुछ साय तक एकांतवास किया और अप्रैल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१९०२ में टेहरी चले गए। टेहरी नरेश को जब उनके आगमन का समाचार मिला तो उन्होंने स्वयं स्वामी रामतीर्थ से भेंट की और उनके लिए गंगा किनारे एक कुटी बनवा दी।

उन्ही दिनों समाचारपत्रों में जापान की राजधानी टोकियो में एक विश्व धर्म सम्मेलन होने की सूचना छपी, सूचना में आयोजित सम्मेलन को उसी स्तर का बताया गया था जैसे कि १८९३ में अमेरिका में हुआ था और स्वामी विवेकानंद ने उसमें हिंदू धर्म की विजय दुंदुभि बजाई थी। टेहरी नरेश ने इस सम्मेलन में स्वामी राम को भेजने की निश्चय किया और उनसे इस तरह का आग्रह भी किया। स्वामी राम तुरंत इस आग्रह को मान गए और आवश्यक तैयारियों के बाद जापान को प्रस्थान किया। वे जापान के लिए जहाज से रवाना हुए। रास्ते में जहाज जहाँ-कहीं भी रुका लोगों ने स्वामीजी का हार्दिक स्वागत किया।

जापान में स्वामीजी लगभग दो सप्ताह ठहरे। उनके भाषणों को वहाँ हर किसी ने पसंद किया। एक बार किसी जापानी ने स्वामीजी से पूछा कि आपने स्त्री-बच्चों को क्यों छोड़ा तो उन्होंने उत्तर दिया कि अपने छोटे से परिवार को एक बहुत बड़ा और विशाल परिवार बनाने के लिए। इसी तरह उन्होंने अपने कृत्यों द्वारा भी जापानियों को बहुत कुछ सिखाया। जिस सर्वधर्म सम्मेलन की बात सुनकर स्वामीजी जापान गए थे, वह गलत निकली। इसकी पुष्टि हो जाने के बाद भी स्वामीजी स्वदेश वापस आने को उत्सुक नहीं हुए और अपना प्रचार अभियान चलाते रहे।

जापान में प्रचार कार्य संपन्न कर वे अमेरिका रवाना हुए और वहाँ लगभग दो वर्ष तक रहे। अमेरिका में उनके सैकड़ों व्याख्यान हुए। कई व्यक्ति उनसे प्रेरणा प्राप्त कर उनके मार्गदर्शन में आत्मविकास की साधना में संलग्न हुए। उनके अमरीकी शिष्यों ने ही उनके व्याख्यानों के नोट्स लिए, नारायण स्वामी भी उनके साथ ही रहते थे और वे प्रस्तुत कार्य में आवश्यक सहयोग दिया करते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमेरिका से वापस भारत लौटते समय स्वामी जी कुछ समय यूरोप के अन्य देशों तथा मिश्र में रुके। मिश्र में इस्लाम धर्म के अनुयायियों ने भी उनके व्याख्यानों को बड़े ध्यानपूर्वक सुना और अनुभव किया कि इस्लाम धर्म, धर्म के मूल सिद्धांतों की इतनी सुंदर व्याख्या कोई व्यक्ति आजीवन अध्ययन करता रहकर भी शायद ही कर सके।

भारत आने के बाद उन्होंने कुछ समय तक देश के विभिन्न भागों का भ्रमण किया और लोगों को व्यावहारिक वेदांत की शिक्षा दी। बाद में उत्तराखंड चले गए और वहीं उन्होंने अपना स्थायी निवास बना लिया। सन् १९०६ की दीपावली थी। उस दिन उन्होंने एक लेख लिखा जिसमें मौत का आह्वान किया गया था। उससे कुछ दिन पूर्व ही उन्होंने अपने शिष्य नारायण स्वामी से कहा था, "राम की तबीअत अब संसार से ऊब गई है। अत: वह शीघ्र ही इस संसार को त्यागने वाला है" और दीपावली को ही उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म धर्म के सच्चे प्रतिनिधि संत तुकाराम

अकाल का यह चौथा वर्ष था। चार वर्ष से वर्षाऋतु में भी सूर्य उसी तरह चमकता था जैसे चैत-वैशाख में। सुबह से ही सूरज की तीखी किरणें लोगों के चेहरों को झुलसातीं और पेट की भूख तन को निचोड़े डालती थी, जैसे—पानी में भिगोए कपड़े को सुखाने के पूर्व धोबी निचोड़ देता है। किसान नंगे आकाश की ओर सूनी आँखों से ताकते रह जाते—शायद कोई बदली उठे और बरसने लगे, पर बदली तो क्या धुआँ भी उठता नहीं दिखाई देता। धुआँ उठे भी तो कैसे? किसी के घर में अनाज के थोड़े से दाने होते तो कोई पकाता भी। लोग गाँव से निकलकर आस-पास के जंगलों में जाते और कंद-मूल ढूँढ़ते। कहीं मिल जाते तो उन्हें ही अपने कमजोर दाँतों से हौले-हौले चबा लेते।

पूना के पास देहू नाम का एक गाँव, उस गाँव में थी एक साहूकार की दुकान। साहूकार कहीं दूर देश से थोड़ा अनाज लाया। एक ही दिन में सारा अनाज बिक गया। बिक क्या गया—लोगों के पास कुछ था तो उसे लेकर पहुँच गए साहूकार के पास और जितना हिस्से में आया उतना अनाज उठा लाए। साहूकार भी कितना उदारमना था। उसने अकाल के इन दिनों में अपना घर भरने की बात नहीं सोची थी, बात सोची थी कि गाँव के प्रत्येक व्यक्ति तक उसके हिस्से का अनाज पहुँच जाए। चाहता तो वह ऐसे समय में खूब पैसा लूट सकता था। पर उसके सामने अपनी संपन्नता का आकर्षण फीका पड़ गया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

था। भूख से बिलबिलाती आँखों का सूनापन देखकर उसने गाँव भर में कहलवा दिया था कि साहूकार के यहाँ अनाज आया है। सभी लोग पहुँच जाएँ और अनाज ले जाएँ।

जिनके पास कुछ था, वे तो कुछ लेकर पहुँच गए थे। जिनके पास कुछ नहीं था उन्हें साहूकार की दुकान पर जाने में संकोच हो रहा था, पर भूख हर तरह का संकोच तोड़ देती है, उसकी आँच में काँच की तरह स्वाभिमान भी चटख जाता है। सो जिनके पास कीमत चुकाने के लिए कुछ नहीं था। वे भी साहूकार की दुकान पर पहुँच गए और साहूकार ने उन्हें निराश नहीं किया। इस प्रकार आनन-फानन में दुकान का सारा अनाज उठ गया । तब एक स्त्री आती है—साहूकार की ओर निहारती है। उसकी आवाज भी नहीं निकल रही है। पेट में अन्न नहीं है तो बोलकर कहे भी कैसे? और साहूकार की आँखों में विवशता तैर आती है।

उस विवशता को देखकर स्त्री की आँखों की याचना और भी घनीभूत हो उठी। साहूकार अपनी जगह से उठा—शायद बिखरे हुए दाने समेटकर थोड़ा अनाज जुट जाय। लेकिन समेटा तो पहले ही जा चुका था। साहूकार जब खाली हाथ दुकान पर आता है तो देखता है स्त्री मर चुकी है। कितनी कारुणिक स्थिति उत्पन्न हुई होगी उस समय—कहा नहीं जा सकता। साहूकार के अंत:करण से एक अभंग फूट पड़ता है—'मुझे शर्म आ रही है। यह स्त्री अन्न की आशा में आई थी, पर मेरे यहाँ अनाज नहीं है और मुझसे आशा टूट जाने के कारण वह मर गई है।'

यह अभंग मराठी साहित्य की अमूल्य निधि है। इस अभंग के रचनाकार की वाणी महाराष्ट्रीय तथा मराठी साहित्य के मर्मज्ञों के लिए वेदवाणी बन गई । उक्त अभंग के स्रष्टा थे— साहूकार संत तुकाराम जिनकी देहू में अनाज की दुकान थी। सन् १६२८ से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाराष्ट्र में अकाल चला आ रहा था। तुकाराम अपनी सारी संपत्ति इसी अकाल की भेंट चढ़ा चुके थे। उन्होंने गाया है—अकाल के कारण लोगों का धन नि:शेष हुआ, उनका आत्मसम्मान खो गया, एक स्त्री 'अन्न-अन्न' करती हुई भूख से तड़पती दम तोड़ गई और शर्म से मेरा माथा जमीन में गड़ गया । मैं भी क्या करूँ, मैं इस दु:ख से ऊब गया हूँ। सारा व्यवसाय ही चौपट हो गया है। तुकाराम को व्यवसाय चौपट हो जाने का रंज नहीं था, रंज था लोगों को भूख से तड़प-तड़पकर मरते देखने का।

तत्कालीन समाज में घर-परिवार के उत्तरदायित्वों से विरक्त होकर वैराग्य और ईशभक्ति के गीत गाना ही साधु संन्यासियों का आदर्श था। किंतु तुकाराम समाज में रहे, समाज के कठोर यथार्थ से सामना किया और कठिन परिस्थितियों—तोड़ डालने वाली विपत्तियों को उन्होंने सहा और संत परंपरा में एक नई कड़ी जोड़ी। इस प्रकार कठिन परिस्थितियों और विकट प्रतिकूलताओं में भी पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों को भली प्रकार निभाते हुए संत परंपरा के आदर्शों का अनुकरण करने वाले संत तुकाराम का जन्म महाराष्ट्र में पूना के पास देहू नामक गाँव में हुआ था। साहूकारी पैतृक व्यवसाय था—अच्छी तरह परिवार चलता था। गाँव में भी खुशहाली थी। बड़ा भाई पिता के कारोबार में हाथ बटाता था सो तुकाराम को प्रारंभ में पारिवारिक चिंताओं से मुक्त ही रहना पड़ा। अपने समय का उपयोग वे गीता, रामायण के अध्ययन में करते थे और जब भी सुनते कि गाँव में कोई महात्मा आया है तो तुरंत उसके पास जा पहुँचते। परिवार के लोगों को तुकाराम की साधु संगति से चिंतित होना स्वाभाविक था। वे सोचते कहीं बेटा घरबार छोड़कर किसी दिन खुद भी साधु न हो जाय। कभी वे टोककर तुकाराम की मन:स्थिति का परिचय भी लेते तो तुकाराम कहते—"मैं तो गीता, रामायण पर महात्माओं से चर्चा करने जाता हूँ। गीता में तो भगवान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने अर्जुन को संन्यासी होने से रोककर सांसारिक कर्त्तव्यों में प्रवृत्त किया था। फिर उसके उपदेश का मुझ पर विपरीत प्रभाव कैसे हो सकता है?''

सुनकर कुछ देर के लिए तो घरवालों का समाधान हो जाता पर पीछे फिर वही आशंका होने लगती। तुकाराम अपनी निष्ठा को प्रमाणित करते हुए घरवालों को आश्वस्त नहीं कर सके और परिजनों को आश्वस्त करने का अवसर भी आया तो ऐसे समय जबकि उनकी निष्ठा का दर्शन करने वाले माता-पिता ही नहीं रहे थे। तब तुकाराम ने किशोरावस्था में पदार्पण किया ही था। उनके माता-पिता दोनों का ही देहांत हो गया। परिवार की जिम्मेदारी बड़े भाई पर आ पड़ी। कारोबार इतना फैला हुआ था कि उसे सँभालना भी बड़ा श्रमसाध्य था, पर बड़े भाई के स्वभाव में वैसी श्रमशीलता भी नहीं थी और न ही थी दायित्वों को अनुभव करने की क्षमता।

माता-पिता तुकाराम पर शंका किया करते थे कि कहीं घरबार छोड़ कर संन्यासी न हो जाय। उनके बारे में तो वह शंका सही नहीं निकली। उनके बड़े भाई घरबार छोड़कर चले गए। अब बड़े भाई की पत्नी और उसके बच्चों सहित घर के अन्य सदस्यों और अपने स्त्री-बच्चों का भार भी तुकाराम के कंधों पर आ गया। तुकाराम ने उस उत्तरदायित्व को बड़ी कुशलता से सँभाला और कारोबार भी भली-भांति चलाने लगे। आकस्मिक रूप से इतने बड़े परिवार का बोझ कंधों पर आ जाने से सामान्य मनोबल का व्यक्ति घबरा उठता है परंतु तुकाराम ने बिना घबराए ही इन बड़ी जिम्मेदारियों को अपने ऊपर ले लिया ।

लेकिन परीक्षा अभी बाकी थी। धर्म और अध्यात्म दर्शन का स्वाध्याय निष्कर्ष और साधु संगति का प्रभाव कितना गहरा होता है—इसकी परख अभी भी शेष थी। आस्तिकतावादी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आस्था के अनुसार सुख और दुःख दोनों का स्वागत करने की मनःस्थिति अभी विकसित हुई है या नहीं—भगवान शायद यह देखना चाहता था।

तुकाराम ने तो सीख रखा था—

सुख सपना दुःख बुदबुदा, दोनों एक समान।
सबका आदर कीजिए, जो भेजे भगवान॥

इस सीख को उन्होंने अपने आचरण में भी उतारा था। कारोबार ठीक चल रहा था कि सन् १६२८ में उस क्षेत्र में पहली बार बारिस नहीं आई, लोगों के हाथ तंग हो गए। अबकी बार नहीं तो अगली बार ऋण चुका दिया जाएगा—इस आशा में तुकाराम पूर्ववत् ग्राहकों से व्यवहार करते रहे। किंतु अगली बार भी वर्षा नहीं हुई और उसके अगली बार भी नहीं। इस तरह तीन साल गुजर गए। पास की संपत्ति चुकने लगी, लोगों से उधार पटाने के लिए तकाजा भी करें तो कैसे, मानवीय आदर्शों से संस्कारित मन इसकी अनुमति नहीं देता था, तीसरे वर्ष गाँव में बीमारी भी फैली। उस बीमारी की चपेट में तुकाराम की पत्नी भी आ गई। वह दमे की मरीज तो पहले से ही थी सो पिछली और नई बीमारी के सम्मिलित आक्रमण ने तुकाराम को चिरविरही बना दिया।

पत्नी का देहांत हुए अभी अधिक समय भी नहीं हुआ था कि तुकाराम के बच्चे भी चल बसे। उनके लिए सारी दुनिया सूनी हो गई। निराशा और एकाकीपन के ऐसे क्षणों में अकसर लोग आत्महत्या कर लेते हैं अथवा पलायनवादी बैरागीवाना धारण कर लेते हैं। पर तुकाराम दूसरी मिट्टी के बने थे। उन्होंने न तो पलायनवाद का रास्ता अपनाया और न खोई हुई वस्तुओं को प्राप्त करने तथा नया परिवार बसाने की आतुरता दरसाई, बल्कि अकाल से पीड़ित जनसमुदाय की सेवा का धर्म मार्ग ही उन्होंने अपनाया। यद्यपि उनके सामने अपने स्वयं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं थी किंतु बड़े भाई का परिवार तो था ही। उसके निर्वाह की व्यवस्था तुकाराम को अपना कर्त्तव्य लगा और कारोबार ठप पड़ जाने पर भी तुकाराम उसके लिए प्रयत्न करते रहे।

अकाल के दिनों में उन्होंने उच्च कहे जाने वाले वर्ग की नैतिकता को भी निकट से देखा जो केवल दूसरों को उपदेश देने के लिए प्रयुक्त की जाती है। उन्होंने गाया है कि लोग तिलक और टोपी तो इस तरह दिखाते हैं जैसे वे दुनिया में एक ही गोस्वामी हैं जबकि भीतर विषय वासना ठूंस-ठूंसकर भरी पड़ी है।

समाज के शीर्षस्थ व्यक्तियों की इस दोहरी नैतिकता को ढोंग बताते हुए तुकाराम ने न केवल ऐसे लोगों की आलोचना ही की वरन समाज में नैतिकता और आदर्शवादिता की प्रतिष्ठा के लिए जन जागृति का कार्य भी किया। अकाल खत्म हो जाने पर उनका कारोबार भी धीरे-धीरे सँभल गया किंतु तुकाराम पूर्ववत् अपने गाँव वालों की सेवा में, उनका नैतिक स्तर ऊँचा उठाने में लगे रहे। जीवन के उत्तरार्द्ध में जब परिवार के बड़े बच्चे घर-गृहस्थी और कारोबार सँभालने योग्य हो गए तो तुकाराम समाज को ही अपना परिवार बनाने के लिए परिवार के सीमित दायरे से बाहर आ गए। कहते हैं उन्हें इसी विजनवास में साक्षात्कार हुआ। उस समय उनकी स्थिति सिद्ध अवधूतों की सी थी—"आकाश मंडप है, पृथ्वी आसन है, मन जहाँ रमता है—वहाँ क्रीड़ा करता है। देह की सेवा के लिए कंबल और कमंडल पर्याप्त है। हवा के निमित्त से समय भी ध्यान में आता है। हरिकथा के भजन में मनचाहा विस्तार किया जा सकता है और उसके विविध प्रकार बनाकर रुचि से खाये जा सकते हैं यहाँ अपने ही मन से संवाद हो सकता है तो अपने से ही विवाद भी किया जा सकता है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस स्थिति को प्राप्त होने पर भी तुकाराम समाजसेवा से विमुख नहीं हुए। समाज को शिक्षा देने और लोकशिक्षण का कार्य करने में वे पहले की भी अपेक्षा अधिक लगे रहते। उनके हृदय में सतत संत्रस्त मानवता के लिए जो पीड़ा थी और जो उपचार था, वह अभंगों के रूप में व्यक्त होता रहा। यद्यपि उनके द्वारा समाज का मार्गदर्शन होते देख तथाकथित उच्च वर्ग नाराज भी हुआ किंतु तुकाराम अपने आचरण और उपदेश से तथा अपनी ईमानदारी और परदुःखकारता से विरोधियों को भी जीतते रहे। पारिवारिक और सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए संत परंपरा का सच्चा अनुकरण करते रहे। सन् १६४९ में उनका पटरपुरा में देहांत हो गया। आज भी फाल्गुन मास में उनकी निधन तिथि पर वहाँ एक बड़ा मेला लगता है। लोग दूर-दूर से संत तुकाराम को श्रद्धांजलि अर्पित करने आते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अमर शहीद—स्वामी श्रद्धानंद

अमृतसर के हत्याकांड से देश के नागरिकों में उत्तेजना फैल चुकी थी। लोग प्रतिवादस्वरूप कुछ कर दिखाना चाहते थे। गोरी सरकार भी जन भावनाओं को कुचलने के लिए पूर्ण रूप से तत्पर थी। दिल्ली नगर में जुलूसों पर प्रतिबंध होते हुए भी स्वामी श्रद्धानंद के नेतृत्व में हजारों व्यक्ति लाल किले के सामने एकत्र हो गए थे। सैकड़ों घुड़सवार सैनिक इधर-उधर घूम रहे थे।

कमिश्नर ने भीड़ को तितर-बितर होने का आदेश दिया। उसी क्षण स्वामी श्रद्धानंद ने गरजते स्वर में कहा—"जो जहाँ खड़ा है, खड़ा रहे। अपना स्थान किसी को छोड़ने का आवश्यकता नहीं है। सरकारी प्रतिबंध हम लोगों को धर्मपालन से विचलित नहीं कर सकते।"

कमिश्नर स्तब्ध रह गया उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि भारत की जनता मृत्युंजयी है। उसने देखा कि लोग टस से मस नहीं हुए। थोड़ी देर वहीं खड़े रहे और बाद को स्वामीजी के आदेश से जुलूस घंटाघर की ओर बढ़ा। घुड़सवार सैनिक भी साथ थे। घंटाघर पर गोरखा सैनिकों की एक टुकड़ी संगीन आगे किए रास्ता रोके खड़ी थी। जुलूस आगे बढ़ता जा रहा था। स्वामीजी ने संगीनों की तनिक भी चिंता न की। एक फौजी गोरे ने उनके सामने बंदूक तान ली। फिर भी वे डरे नहीं। उन्होंने अपनी चौड़ी छाती उसके सामने खोलते हुए कहा—"देखते क्या हो? चलाओ बंदूक। जूलूस पीछे नहीं हटेगा।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वामी श्रद्धानंद आगे बढ़े। उनके पीछे हजारों नगरनिवासी कदम से कदम मिलाकर गोरी सरकार के विरुद्ध अपना विरोध करने के लिए बढ़ते चले जा रहे थे। दूसरे ही क्षण संगीनों के कुंदे नीचे झुक गए थे और रास्ता साफ।

ऐसे देशभक्त और तेजस्वी सन्यासी का प्रारंभिक जीवन भोग विलास के प्रसाधनों के मध्य बीता था। संन्यास के पूर्व का नाम मुंशीराम था। वह राजाओं का जमाना था। इनके पिता पुलिस विभाग में उच्च पदाधिकारी थे। पैसे की अधिकता के कारण राजा और रईसों के बेटे जिस तरह बिगड़ते उसी तरह मुंशीराम मांस, मदिरा से लेकर भोग विलास तक की सारी रंगीनियों का आनंद ले चुके थे। कुसंग एक व्यक्ति को कहाँ से कहाँ पहुँचा सकता है। यह मुंशीराम के जीवन की खुली पुस्तक में आसानी से देखा जा सकता है। भौतिकवाद की चकाचौंध से वह नास्तिक बन चुके थे। फिर भी उन्होंने अपना मस्तिष्क नही खोया था वरन सद्मार्ग की खोज के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते थे।

एक दिन उनकी भेंट आर्य समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानंद से हुई। कई दिन तक उनका वाद-विवाद चलता रहा। उनकी युक्तिसंगत बातों से वह बहुत प्रभावित हुए और उनका परमेश्वर पर अटूट विश्वास जमने लगा।

आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद ने की पर उसे पुष्पित और पल्लवित करने का बहुत कुछ श्रेय स्वामी श्रद्धानंद को है। उन्होंने मिशनरी भावना से कार्य कर अपना तन, मन, धन, लोक-मंगल के लिए उत्सर्ग कर दिया था। गुरुकुल-शिक्षा पद्धति स्वामी दयानंद का स्वप्न था और उसे साकार किया— श्रद्धानंद ने। इन्होंने प्रतिज्ञा की—'जब तक गुरुकुल की स्थापना हेतु तीस हजार रुपये एकत्रित न कर लूँगा, तब तक घर में प्रवेश नहीं करूँगा।

स्वामीजी का यह संकल्प कोई साधारण संकल्प न था। इसके लिए उन्होंने घर-घर जाकर चंदा वसूल किया और सड़क पर खड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होकर लोगों को इस शिक्षापद्धति का उद्देश्य समझाया। स्वामीजी जिस कार्य को अपने हाथ में लेते थे उसे पूर्ण करके ही मानते थे। आखिर वह दिन आ ही गया जब कांगड़ी के भयानक जंगलों में स्वामीजी के अथक प्रयत्नों और आत्मत्याग के बल से नये तीर्थ की स्थापना हुई। भारत के वाइसराय ही नहीं, वरन ब्रिटेन के प्रधानमंत्री राम्जे मेकडोनल्ड तक शिक्षा क्षेत्र में किए गए इस अनूठे प्रयोग को देखने के लिए आतुर हो उठे।

मातृभाषा हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाने वाले वह प्रथम व्यक्ति थे। उन्होंने बड़े-बड़े शिक्षाशास्त्रियों के दिल से इस बात को निकाल दिया कि हिंदी के माध्यम से विज्ञान की उच्च शिक्षा नहीं दी जा सकती। गुरुकुल के अनेक स्नातकों द्वारा विज्ञान, दर्शन तथा इतिहास विषय के मौलिक—ग्रंथों की रचना की गई, साथ ही पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया गया।

स्वामीजी शिक्षा को केवल पुरुषों तक सीमित करने के पक्षपाती न थे। वह चाहते थे कि भारतीय जनसंख्या का अर्द्धांग भी विकसित हो जाए। इसलिये उन्होंने आर्य कन्यापाठशालाओं की स्थापना हेतु भी पूरा-पूरा ध्यान दिया। जल्दी ही गुरुकुलों और महाविद्यालयों का जाल पूरे देश में फैल गया तथा उनके ही प्रयास से हिंदी को राष्ट्र भाषा का महत्त्वपूर्ण पद मिला।

स्वामीजी १८ वर्षों तक गुरुकुल के आचार्य पद पर कार्य करते रहे। कितने ही पालकों ने अपने बच्चों को ब्रह्मचर्य प्रधान राष्ट्रीय शिक्षापद्धति से प्रभावित होकर गुरुकुल में भेजा और कितने ही व्यक्ति तो यह देखने आते थे कि यहाँ विदेशी शासन को उखाड़ने के लिए कौनसी योजनाएँ तैयार की जा रही हैं।

स्वामीजी के विशाल शरीर में विशाल आत्मा निवास करती थी। अनेक क्षेत्रों में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। आदर्शवादी सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार हेतु उन्होंने सन् १८८९ में 'सद् धर्म प्रचारक' तथा १९१८ में 'श्रद्धा'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नामक साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन किया। स्वतंत्रता संग्राम के समय १९१९ में 'विजय' और १९२४ में 'दैनिक अर्जुन' का प्रकाशन प्रारंभ कर उन्होंने राष्ट्रीयता की भावना को जन-जन तक पहुँचाया।

गुरुकुल के विद्यार्थियों को केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं कराया जाता था। समय मिलने पर अनेक विद्यार्थी दक्षिण में हिंदी का प्रचार करने जाते थे। उनकी इन्ही सेवाओं को देखकर सन् १९१३ में भागलपुर में जब हिंदी साहित्य सम्मेलन का चौथा वार्षिक अधिवेशन हुआ तो स्वामीजी को उसका अध्यक्ष चुना गया।

स्वामीजी सच्चे देशभक्त थे। विदेशी शासन उनकी आँखों में काँटे की तरह खटकता रहता था। गांधीजी ने जब असहयोग आंदोलन का सूत्रपात किया तो स्वामीजी ने अपना पूरा-पूरा सहयोग दिया।

स्वामीजी को अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनाया गया तो उन्होंने कांग्रेस मंच से प्रथम बार हिंदी में भाषण दिया था और राजनेताओं का ध्यान अछूत उद्धार की ओर आकर्षित किया।

स्वामीजी ने दलितोद्धार सभा की स्थापना कर अस्पृश्यता निवारण का कार्य शुरू कर दिया। वे चाहते थे कि हिंदुओं के बीच से छुआछूत की भावना को निकाल फेंका जाए। मंदिर और कुएँ समानता के अधिकारों के साथ अछूतों के लिए खोल दिए जाएँ। स्वामीजी निर्भीक थे। वह इससे होने वाले प्रत्येक परिणाम को भुगतने के लिए तैयार थे।

स्वामीजी सभी धर्मों के प्रति समान आस्था रखते पर उनका यह विश्वास था कि यदि मुसलमान और ईसाई प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्मानुयायी बना सकते हैं, तो प्रत्येक व्यक्ति को आर्य भी बनाया जा सकता है। स्वामी श्रद्धानंद अपने इसी विश्वास को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रियान्वित कर रहे थे। एक बार उन्हें जनता के आग्रह पर दिल्ली की जामा मसजिद में भाषण देने हेतु आमंत्रित किया गया। इस्लाम के इतिहास में वह प्रथम अवसर था, जब मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य किसी धर्मानुयायी को मसजिद की धर्मवेदी पर भाषण करने का सुअवसर प्रदान किया गया हो। स्वामीजी ने ऋग्वेद के मंत्रों के सस्वर पाठ से अपना व्याख्यान शुरू किया और शांति पाठ से समाप्त।

स्वामीजी स्पष्टवादी और अति साहसी थे। वे जिस कार्य को अपने हाथ में लेते पूर्ण करके ही मानते थे। अपने दोषों को दूसरे के सम्मुख रखने में उन्हें तनिक भी संकोच न होता था। अत्याचार का विरोध करना उनकी प्रमुख विशेषता थी। सिद्धांत का प्रश्न जब भी सामने आया, वह कभी झुके नहीं। भरे यौवन में पत्नी की मृत्यु हो जाने पर भी उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। इस युग में जबकि छोटी-छोटी बातों से लोगों को जाति से अलग कर दिया जाता था। स्वामीजी ने अपनी संतान का विवाह जाति-पाँति के बंधनों को तोड़कर किया। गुरुकुल हो या बाहरी क्षेत्र उन्हें प्रतिक्रियावादी शक्तियों से सदैव संघर्ष करना पड़ा।

स्वामीजी उन समाज सुधारकों से बिलकुल अलग थे जिनकी कथनी और करनी में वैषम्य होता है। उन्होंने आर्य समाज के मंच से अपने प्रथम भाषण में ही स्पष्ट कह दिया था "जो वैदिक धर्म के अनुकूल अपने जीवन को नहीं ढाल रहे हैं, उन्हें उपदेशक बनने का कोई अधिकार नहीं है।"

भारत के नवनिर्माण में उनके योगदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। उन्होंने प्रत्येक कार्यक्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी थी और एक दिन अपने सिद्धांतों के लिए बलिदान हो गए। उन्हें एक धर्मोन्मादी मुसलमान ने गोली से मार डाला। फिर भी, वे भारतीय महापुरुषों के आकाश में उज्ज्वल नक्षत्र की तरह सदा अजर-अमर बनकर प्रकाशवान बने ही रहेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ठाकुर दयानंद—जिन्होंने भारतीय जनता को नया स्वर दिया

सन् १९०५ में जब राष्ट्रीय नेताओं ने स्वदेशी अपनाने का आह्वान किया तो भारतीय देशभक्तों में लाख अच्छी हो पर विदेशी वस्तु परित्याज्य और कितनी ही बुरी हो पर अपने देश की चीज अच्छी, इस विचारधारा ने लाखों व्यक्तियों के आंतरिक और बाहरी जीवन में उथल-पुथल मचा दी। उस समय तो राजनीतिक आंदोलन बड़ी तेजी से भड़का पर शीघ्र ही उसका जोश ठंढा पड़ने लगा। यह आंदोलन कुछ ही समय में शांत भले ही पड़ गया हो, पर इसका प्रभाव चिरस्थायी हुआ।

जो भावनाशील लोग इस आंदोलन के प्रवाह में बह गए थे, उन्होंने बहना ही स्वीकार किया। बंगाल के एक शासकीय कार्यालय में कार्यरत एक कर्मचारी ने भावनाओं और देशप्रेम के वेग में अपनी नौकरी ही छोड़ दी और राष्ट्रीयता तथा भारतीयता के प्रति स्वयं को समर्पित कर दिया। युवक का चिंतन दूसरी ही दिशा में चल रहा था। वह सोचता था कि वर्षो की गुलामी ने भारतीय जनमानस को इसे बुरी तरह दिवालिया बना दिया है कि वह अपने गौरवशाली सांस्कृतिक मूल्यों को भी भूलता जा रहा है। कई शताब्दियों के इस्लामी राज्य ने भारतीय जनता को अपनी संस्कृति के प्रति उतना उदासीन नहीं बनाया जितना कि लगभग १०० वर्ष के ब्रिटिश राज ने। युवक इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जब तक भारतीय जनता के हृदय में भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति आस्था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को पुनर्जाग्रत नहीं किया जाता तब तक स्वदेश प्रेम का स्थायी आधार नहीं बनेगा।

स्वदेशी आंदोलन जब ठंढा पड़ गया तो कई विचारशील व्यक्तियों ने भी इस स्थिति का अनुभव किया। वे भी सोचने लगे कि हम लोग अपने जातीय महत्त्व और गौरव को शनैः शनैः भूलते जा रहे हैं। विस्मृति का यह गंभीर रोग अपनी सीमा पर पहुँच गया है। थोड़े समय और ऐसा चलता रहा तो भारत में ब्रिटिश राज के पैर स्थायी रूप से जड़ें जमा लेंगे। अतः मूर्द्धन्य नेताओं का ध्यान सांस्कृतिक पुनर्जागरण की ओर भी गया। कई लोग अभियान स्तर के प्रयास में जुटे, सभाएँ होती, संगठन खड़े किए जाने लगे, जन- संपर्क आरंभ हुआ और जनसाधारण को भाँति-भाँति के तरीकों से अपने सांस्कृतिक गौरव का स्मरण कराया जाने लगा।

पर वह युवक जिसकी आयु मुश्किल से तीस वर्ष की रही होगी—अपने लिए भिन्न रास्ता बना रहा था। वह आसाम के सिलचर नगर में गया और वहाँ से तीन मील दूर पहाड़ी जगह पर एक आश्रम की स्थापना की, जिसका नाम रखा—अरुणाचल आश्रम। अन्य लोग जहाँ सभाएँ आयोजित कर भाषणों द्वारा सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य वैचारिक धरातल पर कर रहे थे, वहीं इस युवक ने विचार से भी अधिक गहरे प्रभावित करने वाली भावनाओं के तार छेड़े। आश्रम में नित्य प्रति संकीर्तन चलता और उनके माध्यम से लोगों की भावनाएँ जगाई जातीं। संकीर्तन और भजन- गायन से किसको परहेज होता सो सभी वर्ग के लोग आश्रम में आते। युवक की वाणी में ऐसा जादू था कि वह हर किसी के हृदय को छू जाती और मन में ऐसी टीस कि सुनने वालों के अंदर तक घुसती जाती। यही कारण था कि आश्रम में आने वाले युवक धीरे-धीरे देश और जाति के लिए अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने की भावना से सन्यास लेने लगे। इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार जनजागरण का विशेष प्रयोजन पूरा करने के लिए धर्म के माध्यम से ही आगे पग बढ़ाने वाले अरुणाचल आश्रम के संस्थापक का नाम था— ठाकुर दयानंद जिन्होंने आगे चलकर जब स्वतंत्रता आंदोलन ने जोर पकड़ा तो एक से एक तपे हुए स्वतंत्रता सेनानी देश को दिए।

अरुणाचल आश्रम में भगवान शंकर और महाकाली की प्रतिमा स्थापित की गई थी तथा उसकी अध्यक्षा स्वामी विवेकानंद की शिष्या भगिनी निवेदिता को बनाया गया। सिस्टर निवेदिता उस समय भारत में स्त्री शिक्षा और समाजसेवा का कार्य कर रही थी। वे युवकों को राष्ट्र प्रेम और देशभक्ति की प्रेरणा भी देती थी। आश्रम में हर वर्ग और हर स्थिति के व्यक्ति को आने तथा मिशन का कार्य करने की छूट थी। लिंग और जाति भेद के कारण किसी से असमानता का व्यवहार नहीं किया जाता था। इस कारण ठाकुर दयानंद के इस प्रयास की सामाजिक और विचारशील धार्मिक नेताओं ने भी सराहना की।

आश्रम यों तो संकीर्तन का केंद्र और धर्म प्रचार का कार्य करता दिखाई देता था। पर मूलत: वहाँ से जो प्रवृत्तियाँ चलती थीं, वे राष्ट्रीयता के जागरण और लोगों में स्वतंत्रता प्राप्त करने की भावना जगाने का ही प्रयोजन पूरा करती थीं। इस मिशन की कार्य प्रणाली बहुत कुछ बंकिम बाबू के उपन्यास 'आनंदमठ' की तरह थी। आनंदमठ उपन्यास ने अपने समय में स्वतंत्रता आंदोलन को जो बल दिया वह एक संगठन से भी अधिक है। इसमें एक ऐसे सन्यासी दल की कहानी है, जो किसी घने जंगल में गुहा बनाकर रहता है और विदेशी शासकों को मातृभूमि से खदेड़ देने का प्रयत्न करता है।

अरुणाचल आश्रम के कार्यकर्ता कुछ दिनों बाद गाँव-गाँव में भ्रमण करने लगे और प्रचार तथा संगठन बनाने लगे। उनके भजनों से सांस्कृतिक जागरण की ध्वनि सुनकर अंगरेज अधिकारियों को शंका होने लगी कि ठाकुर दयानंद कहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आनंदमठ की योजना को कार्यान्वित करने में तो नहीं लगे हैं। इसकी जांच करने के लिए जासूस भी लगाए गए, पर सारा काम इतने सुनियोजित ढंग से चलता रहा कि अंगरेजों को उन पर हाथ डालने का मौका भी नहीं आया।

लेकिन अधिकारियों को तो जैसे विश्वास हो गया था। इसलिए सरकार ने अरुणाचल आश्रम के आस-पास पुलिस का पहरा लगा दिया। वे आश्रम से संबद्ध लोगों को भी तरह-तरह से डराने-धमकाने लगे। शासकीय कर्मचारियों पर आश्रम से कोई संबंध रखने के लिए प्रतिबंध लगा दिया गया और उनका आना-जाना भी रोक दिया गया। पर आश्रमवासी इससे न तो विचलित हुए और न भयभीत। वे अपना काम पूर्ववत करते रहे। अंगरेज सरकार ने जब आश्रम के कार्यकर्त्ताओं को परेशान करना आरंभ किया तो सन् १९१२ में ठाकुर दयानंद ने घोषणा की कि सरकार हम पर जो दोष लगा रही है और हम पर अत्याचार कर रही है, उससे मजबूर होकर हम भी यह घोषणा करते हैं कि उसे हम अपना शासन नहीं मानते। आश्रमवासी इससे परेशान होकर जो कदम उठाएँ उसकी जिम्मेदारी शासक वर्ग पर ही होगी।

इस घोषणा से सरकारी अधिकारियों का रोष और बढ़ गया तथा ८ जुलाई १९१२ को पुलिस के एक बड़े दल ने आश्रम पर धावा बोल दिया। आश्रमवासियों ने पुलिस वालों का प्रतिरोध नहीं किया तो भी शीघ्र ही पुलिस के सिपाहियों ने गिरफ्तार कर लिया और उन्हें बंदूक के कुंदों तथा संगीनों से बहुत मारा। महात्मा गांधी ने इससे आठ वर्ष बाद असहयोग का शंखनाद किया था, पर ठाकुर दयानंद ने जैसे उसी समय असहयोग का एक उदाहरण प्रस्तुत किया। आक्रमण उन पर भी हुआ और उनकी रक्षा करते हुए माता मैत्रेयी की हड्डी टूट गई।

सब मिलाकर लगभग ६० व्यक्ति गिरफ्तार किए गए जिन्हें शाम तक थाने में रखा गया। उनमें से ४५ को छोड़ दिया गया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और शेष पर मुकदमा चलाया गया जिनमें ठाकुर दयानंद भी थे। ठाकुर दयानंद ने अदालत में भी बयान देने से इनकार कर दिया और वहाँ भी असहयोग किया। उन्होंने इतना ही कहा— "अभी तक सरकार ने हमारी शिकायतों पर ध्यान न देकर पक्षपात किया है। इसलिए मुझे अपने बचाव के लिए कुछ नहीं कहना।"

ठाकुर दयानंद के अन्य शिष्यों ने भी उन्ही का अनुकरण किया और उन्होंने भी अपने बचाव में कुछ नहीं कहा। जब किसी ने अपने बचाव में कुछ नहीं कहा तो फैसला करने में क्या लगता था। अंगरेज न्यायाधीश ने ठाकुर दयानंद को डेढ़-डेढ़ वर्ष की और शेष व्यक्तियों को तीन महीने से लेकर एक वर्ष तक की सजा दी। जेल जाते समय उन्होंने अपने अनुयायियों को धैर्य बँधाते हुए कहा—"जिन लोगों में आध्यात्मिक शक्ति का विकास हो चुका है, उनकी गति को कोई रोक नहीं सकता, यहाँ तक कि भगवान भी।

उनके शिष्यों को आतंककारी कार्यों का भय नहीं था, वरन अपने गुरु पर आई इस विपत्ति का दुःख था। लेकिन वे हाथ पर हाथ रखकर बैठे नहीं रहे। कुछ समय बाद अरुणाचल आश्रम के कार्यकर्ता पुनः संगठित होकर अपना कार्यक्रम चलाने लगे। अब जगह-जगह कीर्तन यज्ञ होते। पवना नगर के एक कार्यकर्ता ने अपने यहाँ सात दिन तक अखंड कीर्तन चलाया। इससे वहाँ के अधिकारियों में बड़ी खलबली और चिंता फैली। उन्होंने किसी तरह कीर्तन मंडली को वहाँ से हटाया।

राष्ट्रीयता की भावना को जाग्रत करने के साथ-साथ अरुणाचल मिशन की दूसरी विशेषता थी— समाज सुधार के कार्यक्रम । उस समय ऊँच-नीच, बाल-विवाह, सती-प्रथा आदि कितनी ही कुरीतियाँ समाज को घुन की तरह चाटे जा रही थीं। स्वामी जी द्वारा चलाए गए कीर्तन कार्यक्रमों द्वारा सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन की चेतना जाग्रत हुई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसके साथ ही ठाकुर दयानंद ने सामाजिक विचारधारा भी समाज को दी। अरुणाचल मिशन के विचार और कार्यपद्धति को स्पष्ट करते हुए मिशन की एक पत्रिका में लिखा—एक नवीन शक्ति प्राप्त करके संन्यासियों का एक दल कार्यसिद्धि के लिए उद्यत होगा। अनेक युवक साधनारत होकर अग्रसर होंगे। भारत जाग्रत होगा, समस्त विश्व में धर्म का राज्य स्थापित करने के लिए अब नया प्रकाश और नवीन आनंद लेकर नया युग आ रहा है। भारतवासी क्षुद्र होकर नहीं रहेंगे वरन सारे विश्व में एक विराट और उदार सभ्यता का प्रचार करेंगे।

इस प्रकार विश्वधर्म और विश्वमैत्री का संदेश देते हुए ठाकुर दयानंद ने सन् १९३७ में महाप्रयाण किया। उन्होंने भारतीय जनता को नवजागरण का संदेश देते हुए विश्वधर्म का जो उदार स्वरूप विचारशील व्यक्तियों के सम्मुख रखा, वह आज भी जन-जन के लिए प्रेरणादीप का कार्य कर रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीयता के संरक्षक महात्मा हंसराज

यह वह समय था, जब भारत में अंगरेजी राज्य की जड़ें मजबूत करने के लिए शिक्षा को साधन रूप में प्रयुक्त किया जा रहा था। १८५७ के बाद अंगरेज कूटनीतिज्ञों ने यह बात अच्छी तरह समझ ली थी कि जब तक भारतीयता को नष्ट करके भारत में अंग्रेजियत का प्रचार नहीं किया जाएगा, अंगरेजों का राज्य चिरस्थायी नहीं हो सकता।

अंगरेजों ने इसके दो मार्ग निकाले— एक तो धर्मप्रिय साधारण जनता को ईसाइयत की विशेषता बतलाकर और उनकी सामाजिक परिस्थिति तथा आर्थिक दशा का लाभ उठाकर ईसाई बनाना, दूसरे अपेक्षाकृत संपन्न तथा जागरूक जनता में तरुण वर्ग को शिक्षा के माध्यम से अंग्रेजियत में रँगकर अपना मानसिक गुलाम बनाना।

अत: सरकार ने शिक्षा प्रसार का दायित्व अपने पर लेने के बहाने से जनता के बीच जनसहयोग से चलने वाली सभी छोटी-बड़ी शिक्षा संस्थाओं को बंद कर दिया, जिनमें धर्म के माध्यम से जीवन के सभी अंगों की शिक्षा दी जाती थी। सरकारी स्कूल स्थापित किए गए और उनमें बाबूशाहों का निर्माण होने लगा, ईसाइयत सिखाई जाने लगी।

सरकार की यह योजना सफल हुई और नवयुवक अंगरेजी राज्य के अनुकूल शिक्षा पा-पाकर उसके यंत्र बनने लगे। थोड़ी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंगरेजी पढ़ने और अंग्रेजियत को अपनाने वालों को अच्छे-अच्छे सरकारी पद मिलने लगे तथा वे लोग इसे अपना सौभाग्य समझने लगे।

उस समय सरकार की इस भयंकर योजना का विरोध करना शेर के दाँत गिनने के समान था। सरकार सन् १८५७ ई० के आघात से आहत होकर बौरा चुकी थी और जरा सा भी विरोध करने वाले को राजद्रोही ठहराकर तरह-तरह के त्रास देकर बरबाद कर रही थी। बड़ा विषम समय था। एक ओर भारतीयता थी और दूसरी ओर प्राणों का भय। स्वातंत्र्य संग्राम की विफलता ने जनता में एक निराशा की भावना पैदा कर दी थी। लोग किसी भी अत्याचार को ईश्वरीय इच्छा समझकर सह लेने में ही खैरियत समझते थे।

ऐसी भयंकर परिस्थिति में जो व्यक्ति अपने बुद्धि एवं साहस के बल पर राष्ट्र की रक्षा कर सके, वह वास्तव में परमात्मा का रूप ही थे।

जहाँ एक ओर लोग भय से किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर अनचाहे भी सरकारी शिक्षा योजना में सहयोग कर रहे थे, वहाँ एक आत्म-विश्वासी व्यक्ति ऐसा भी था, जो प्राणों को दाँव पर लगाकर सरकार की इस विषम योजना को सफल होने से रोक देने के लिए मन ही मन संकल्पपूर्ण तैयारी कर रहा था और वह व्यक्ति था—नव युवक हंसराज।

हंसराज जो आगे चलकर—महात्मा हंसराज के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह जिस समय शिक्षा पा रहे थे, उस समय सरकार की इस नीति का भी अध्ययन कर रहे थे। वे सरकार की इस शिक्षा-प्रणाली के प्रारंभ से ही विरोधी थे, किन्तु उन्होंने उसका बहिष्कार नहीं किया। प्रस्तुत अधिकाधिक संलग्नता से विद्या प्राप्त की, अंगरेजी पढ़ी। वे जानते थे कि कोई भी भाषा क्यों न हो, यहि वह ऊँचे स्तर तक पढ़ी जाती है तो कोई ऐसी हानि नहीं पहुँचा सकती,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जैसी कि हानि वह निम्न स्तर तक पढ़ने पर पहुँचाती है। हानि पूर्णता से नहीं, अपूर्णता से होती है।

यही बात किसी धार्मिक दर्शन के संबंध में भी होती है। जिस धार्मिक शिक्षा की ऊपरी बातों तक ही सीमित रहा जाएगा, उसका कुछ ऐसा प्रभाव भले पड़ जाए, जिससे कोई एक विश्वास अथवा पद्धति से हटकर दूसरे विश्वास अथवा पद्धति पर चला जाए, किंतु जब उसकी गहराई में उतरकर उसका साँगोपांग अध्ययन तथा मनन किया जाता है, तब उसकी सारी असलियत सामने आ जाती है और उस दशा में यदि वह दर्शन सत्य पर आधारित है तो उसके अपनाने में किसी हानि की संभावना नहीं रहती और वह यदि यों ही कपोल-कल्पित चिंतन पर आधारित होगा तो किसी भी विवेकशील व्यक्ति पर प्रभाव न डाल सकेगा।

महात्मा हंसराज अंगरेजी का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर उसी के माध्यम से अंगरेजों को समझने और उनकी चाल को विफल करना चाहते थे। साथ ही ईसाइयत के प्रभाव का उन्हें कोई भय न था। इसके लिए वे भारतीय धर्म तथा वैदिक साहित्य को अच्छी तरह पढ़ चुके थे और स्वामी दयानंद की तीव्र तर्क पद्धति की अपने मस्तिष्क में प्रति स्थापना कर चुके थे।

महात्मा हंसराज ने ईसाइयत के बीच अंग्रेजी पढ़ी और इतना गंभीर अध्ययन किया कि जिस समय उन्होंने उत्तम श्रेणी में बी० ए० पास किया तो उन्हें अपने में लाने और उनकी योग्यता का लाभ उठाने के लिए सरकार के मुँह में पानी आ गया। बी० ए० की उपाधि लेते ही उसने महात्मा हंसराज की ओर बड़ी से बड़ी सरकारी नौकरी की फूल मालाएँ बढ़ाईं। सरकार को पूरी आशा थी कि उनकी मादक गंध से एक भारतीय युवक अवश्य मोहित होकर आकर्षित होगा और अंगरेजी राज्य की जड़ें मजबूत करने में सहायक बनेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किंतु महात्मा हंसराज उन युवकों में न थे जिनके सामने मौज-मजा लेने के अतिरिक्त जीवन का कोई अन्य लक्ष्य ही न होता। उस समय जब अंगरेज सरकार शिक्षा के कुठार से भारतीयता की जड़ें काटकर अंग्रेजियत बो रही थी और किसी भी माई के लाल के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही थी, तब भला भारतीयता के प्रति भयंकर खतरा अनुभव कर लेने पर भी वह किस मुँह से मौज-मजा लेते और चैन की नींद सोते। अन्याय एवं अनौचित्य के प्रति बलिदान की परंपरा जगाए रखने के लिए कोई न कोई बलि वेदी पर आता ही रहना चाहिए, अन्यथा राष्ट्रीयता मिट जायेगी, देश निर्जीव हो जाएगा और समाज की तेजस्विता नष्ट हो जाएगी।

जिसने खतरा अनुभव किया, उसका कर्त्तव्य था कि वह आगे बढ़े। महात्मा हंसराज ने बड़ी गंभीरता से विचार करके तथा समाज की मनोवृत्ति का ठीक-ठीक अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि सरकार की इस कुटिल शिक्षा नीति का विरोध किसी आंदोलन, संघर्ष अथवा खुली चुनौती के रूप में करना ठीक न होगा। सरकारी शिक्षा प्रणाली को किसी समानांतर शिक्षा प्रणाली से ही निरस्त करना ठीक होगा।

अध्ययन से निवृत्त होकर चल पड़ा भारतीयता के संरक्षण का व्रती। किधर? रोटी-रोजी और मौज-मजे की तलाश में नहीं, एक ऐसे बिंदु की तलाश में, जहाँ से वह अपना शुभ अभियान प्रारंभ करे। जिस दिन निस्पृह एवं निष्कलंक समाजसेवियों, धर्मनिष्ठों तथा देशभक्तों को रोटी की कमी पड़ने लगेगी, उस दिन संसार से राष्ट्रीयता की संज्ञा ही उठ जायेगी। देश और धर्म की चिंता करने वाले मनीषियों को चाहिए ही क्या? केवल मुट्ठी भर अन्न और वह भी इसलिए कि जनसेवा के लिए वे कल भी जी सकें। जिस आत्मत्यागी की सारी कामनाएँ, वासनाएँ और आवश्यकताएँ किसी जनकल्याण के यज्ञ में आहुति बन चुकी हों, उसे अपनी सुध रहती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही कब है? उसकी खोज-खबर लेने का दायित्व तो उन कोटि-कोटि व्यक्तियों पर आ जाता है, जिनके हित के लिए वह अपने को खपा रहा है।

लाला हंसराज के सामने केवल एक उद्देश्य था कि कोई ऐसी योजना बनाई जाए जिससे जनसाधारण को भारतीय राष्ट्र के अनुकूल शिक्षित करके उनमें आत्मविश्वास, देशभक्ति तथा स्वाभिमान की भावना जगाई जा सके। भारतीयता के प्रति बढ़ती हुई उनकी हीन भावना और ईसाइयत से ओत-प्रोत अंग्रेजियत के प्रति बढ़ती हुई आस्था को रोका जा सके। महात्मा हंसराज के बुद्धिमत्तापूर्ण इस एक उद्देश्य में ही राष्ट्र की सारी आवश्यकताएँ सन्निहित थीं। देखने में छोटा लगने वाला यह उद्देश्य कितना व्यापक था? इसको कोई दूरदर्शी बुद्धिमान ही देख सकता था। वे कोई लंबी- चौड़ी योजना सामने रखकर जनता को भयभीत करना तथा सरकार को चौंकाना नहीं चाहते थे।

एक समय में कोई एक ही विचार किसी एक ही मस्तिष्क में नहीं आता, लाखों के मस्तिष्क में १९-२० के अनुपात तथा बुद्धि की पात्रता के अनुसार एक साथ अवतरित होता है। जब कोई एक साहसी उसकी समीचीनता की घोषणा करने के लिए खड़ा होता है तो उसके झंडे के नीचे सजातीय विचारवानों को एक बड़ी संख्या में इकट्ठा होते देर नहीं लगती।

लाहौर में कुछ विचारवानों ने स्वामी दयानंद कालेज कमेटी की स्थापना कर रखी थी और चाहते थे कि किसी प्रकार स्वामी दयानंद के नाम पर ऐसा विद्यालय प्रारंभ किया जाए, जिसमें ठीक-ठीक राष्ट्रीय शिक्षा दी जा सके। कोई कमेटी बना लेना एक बात है और उसके उद्देश्य को कार्यान्वित करना दूसरी बात। कमेटी तो बना ली किंतु सरकारी भय के कारण उसके सदस्य यह न समझ पाते थे कि स्कूल की स्थापना करके उसे कैसे चलाया जाए?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्वान हंसराज ने कमेटी में प्रवेश किया और एक छोटा सा विद्यालय स्थापित करके उसमें अवैतनिक शिक्षक बन गए। सच्ची भावना से योजना का सूत्रपात हो गया और उसकी प्रगति के साथ विरोध भी प्रारंभ हो चला। किंतु इससे क्या? जनसाधारण का विरोध योजना की महानता का प्रमाण पत्र होता है। जिस योजना का विरोध नही होता, जिस नियोजन की आलोचना नहीं होती, समझ लेना चाहिए कि उस योजना में कोई जीवन नहीं है, कोई नवीनता नहीं है।

उक्त नवजात संस्था को मिटा सकने के लिए सरकार कोई बहाना न पाकर केवल इतना ही कर सकी कि उसने उसे कोई आर्थिक सहायता देने से इनकार कर दिया, इसको संस्थापकों ने शुभ ही समझा। क्योंकि वे स्वयं ही सरकार से कोई सहायता न लेना चाहते थे, क्योंकि उस दशा में उन्हें सरकारी नियमों के पचड़े में पड़ना होता, जिससे संभव था उन्हें अपने उद्देश्य में कुछ हेर-फेर करना पड़ता। उद्देश्य की न्यूनता के साथ पाई हुई किसी सुविधा की अपेक्षा उद्देश्य की रक्षा में पाई असुविधा अधिक श्रेयस्कर होती है।

सरकार ने न केवल अनुदान देने में ही विमुखता दिखाई, बल्कि उक्त विद्यालय को मान्यता देने में भी अनुदारता बरती। किंतु सुयोग्य, शिक्षक महात्मा हंसराज अपना काम करते रहे। शीघ्र ही उनके परिश्रम का फल जनसाधारण की चर्चा के रूप में फलीभीत हुआ और लोग संस्था की ओर आकर्षित होने लगे। आत्मानुशासित तथा त्यागी शिक्षक के पढ़ाए हुए छात्र चमकते हुए हीरों की तरह निकलने लगे, जिससे अभिभावकों की आस्था दिनोंदिन बढ़ती गई और छोटा सा प्रारंभिक स्कूल विस्तार एवं विकास पाने लगा।

कुछ समय बाद उस संस्था को डी० ए० वी० स्कूल के नाम से ख्याति प्राप्त हुई और उसके शिक्षा अभियान को डी० ए० वी०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आंदोलन का नाम मिला। डी० ए० वी० स्कूल की वेग से बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर सरकार को शर्म आई और उसने जन-आंदोलन के भय से स्कूल को मान्यता दे दी। मान्यता के प्रथम वर्ष में ही सुयोग्य शिक्षक के पढ़ाए विद्यार्थियों ने हाईस्कूल की सारी छात्रवृत्तियाँ जीत लीं।

महात्मा हंसराज की भावनापूर्ण तपस्या फलीभूत हुई। उनका त्याग अंकुरित हुआ और देश में डी० ए० वी०स्कूलों तथा कॉलेजों का जाल बिछने लगा। अनेक बैंकों, बीमा कंपनियों तथा उद्योगों ने मुक्तहस्त से दान देना प्रारंभ कर दिया और स्कूल-कॉलेजों में बदलने लगे।

महात्मा हंसराज के जीवन काल में डी० ए० वी० मिशन के अनेक शिल्प विद्यालय, टेकनीकल स्कूल, आयुर्वेदिक कॉलेज, नार्मल स्कूल, वैदिक शोध संस्थान, कला-विज्ञान कॉलेज तथा वैदिक धर्म प्रचारकों की शिक्षण संस्थाएँ बन गईं। इसके अतिरिक्त डी० ए० वी० आंदोलन के अंतर्गत उसके अपने बैंक, बीमा कंपनी तथा अनेक उद्योग भी चलने लगे।

महात्मा हंसराज की तपस्या का यह चमत्कारी फल देखकर सरकार के पाँव काँपने लगे और उसे अपनी लोकप्रियता बनाए रखने के लिए सरकारी शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करना पड़ा। महात्मा हंसराज का मिशन पूरा हुआ। भारतीयता की रक्षा हुई और अंगरेज कूटनीतिज्ञों की दूरगामी योजना विफल हुई। डी० ए० वी० आंदोलन के रूप में देश को महात्मा हंसराज की देन अनुपम है, जिसके लिए—क्या भारतीय और क्या भारतीयता, युग-युग तक उनकी आभारी रहेगी।

आज से लगभग २७-२८ वर्ष पूर्व संसार से वह महान् आत्मा दिवंगत हो गई, किंतु डी० ए० वी० शिक्षा संस्थाओं तथा आंदोलन के अंतर्गत चलती हुई योजनाएँ उसे अमर रखेंगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मरुस्थल में खिला एक सुंदर फूल

साधु वास्वानी

सन् १९२२ में सिंध प्रांत के थावरदास लीलाराम वास्वानी ने प्राचार्य पद से इस्तीफा दे दिया। कारण था—वर्तमान जीवनक्रम से निर्वेद और वैराग्य। उदासीनता का जन्म जीवन की एकमात्र अवलंब वृद्धा माता के देहांत से पैदा हुआ। माँ-बाप तो सभी के स्वर्गवासी होते हैं। दुःख भी सभी को होता है—परंतु मात्र इसी कारण से कोई अच्छा पद और सम्मान नही छोड़ देता। वास्वानी के प्राचार्य पद से त्यागपत्र की घटना का दूसरा और पहले से भी बड़ा कारण था—माँ को दिया गया एक वचन। जिसमें उन्होंने अपना सारा जीवन देश-सेवा के लिए अर्पित कर देने का वायदा किया था।

अपने पुत्र के हृदय में बसने वाले प्रेम और श्रद्धा से माँ अच्छी तरह परिचित थी। वह जानती थी कि मेरा अभाव थावरदास को जीवन से एकदम वितृष्ण और विरक्त बना देगा। ऐसी स्थिति में कहीं वह आत्महत्या या जीवन से पलायन ही न कर जाय—इसलिए उसे एक काम में लगा देना उपयुक्त है। जिसमें वह अपनी प्रतिभा और योग्यता को अच्छी तरह किसी महत्कार्य की पूर्ति में नियोजित कर सके।

अनपेक्षित सी लगने वाली किंतु अनिवार्य घटनाएँ जब घटती हैं तो भावुक हृदय इस प्रकार उद्विग्न हो उठते हैं जैसे—यह सब आकस्मिक और बड़े भयंकर रूप से हुआ हो। ऐसे लोगों का जीवन और जगत से विरक्त निराश हो जाना कोई बड़ी बात नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। इस अवसर पर उन भावुक मन व्यक्तियों को कोई भावात्मक संबल मिल जाय तो वे अपने माध्यम से देश और समाज की महती सेवा तथा मानवता का महान उपकार कर सकते हैं। टी० एल० वास्वानी की समझदार और दूरदर्शी माता ने भले ही अपने पुत्र से यह वचन केवल उनकी जीवन रक्षा के लिए ही लिया हो, परंतु समाज को उनसे जो कुछ मिला—उसके लिए संसार उनकी माता का भी बहुत कृतज्ञ है।

टी० एल० वास्वानी का जन्म मरुस्थली इलाके से घिरे हुए सिंध प्रांत के हैदराबाद जिले में २५ नवंबर १८७९ ई० को हुआ था। घर की गरीबी और समर्थ अभिभावक का अभाव उनके मार्ग में बाधा तो बनी, परंतु माँ और पुत्र दोनों ने हार नहीं मानी। दृढ़ संकल्प और तन्मय श्रम के आधार पर माँ ने सहयोग दिया और पुत्र ने विकास का लक्ष्य अपनाया। परिस्थितियाँ कितने ही अवरोध उत्पन्न करें, परंतु मानवीय पुरुषार्थ और संकल्प बल के आगे उनकी कहाँ चलती है? भले ही भूखे रहकर दिन गुजारना पड़ा हो परंतु ममतामयी माँ ने सुखी भविष्य की आशा से अपने पुत्र की शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध किया। उच्च शिक्षा का मूल्य तथा महत्त्व समझकर साधु वास्वानी भी अपनी माँ का स्वप्न साकार करने के लिए डटे रहे।

कराची के डी० जे० सिंध कॉलेज से उन्होंने एम० ए० पास किया। उस समय अंगरेजी भाषा पर उनका अदभुत अधिकार था। कॉलेज पत्रिकाओं तथा अन्य पत्रों में भी उनके अंगरेजी निबंध प्रकाशित होते रहते थे, जिसे देखकर उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षक तक आश्चर्य चकित रह जाते थे। स्वयं और माँ के निर्वाह से लेकर अध्ययन करने तक का प्रबंध टी० एल० वास्वानी ने जिस कुशलता के साथ किया था, उसे देखते हुए उनकी लक्ष्य निष्ठा का महत्त्व अवश्य ही स्वीकार करना होगा। अपना कार्य ईमानदारी और व्यवस्थित ढंग से किया जाय तो परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर भी वे समस्याएँ बोझ नहीं बनतीं। आसानी से उन्हें सुलझाया जा सकता है।

एम० ए० पास कर लेने के बाद ही उन्हें तुरंत सिंध कॉलेज में दर्शनशास्त्र तथा अंगरेजी का प्रोफेसर नियुक्त कर दिया गया। माँ के लिए तो यह सर्वाधिक खुशी का समय था। जिस अभिलाषा की पूर्ति के लिए वह इतने दिनों से कष्टपूर्ण घड़ियों को जी रही थी वह साध पूरी हो गई, परंतु शिक्षक वास्वानी को तो अभी बहुत प्राप्तव्य शेष था। अपनी दार्शनिक प्रतिभा को निखारने के लिए वे यहाँ से वहाँ भटकते रहे। कोलकाता और उत्तर भारत के कई कॉलेजों में लंबे समय तक शिक्षक रहे। इस कार्यावधि में उन्होंने कई विद्यार्थियों को दीक्षित किया। डा० राजेंद्र प्रसाद जैसी विभूति उनके शिष्यों में से रहे हैं।

टी० एल० वास्वानी का सर्वाधिक लगाव धर्म और दर्शन से रहा। भारत ही नहीं, विश्व के भी अन्य कई धर्मों और संस्कृतियों का उन्होंने गहन अध्ययन किया। विश्व की सभी संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन कर उन्होंने सर्वश्रेष्ठ वरेण्यं की प्राप्ति भारतीय धर्म और संस्कृति के तत्त्वों से हुई। इसलिए उन्होंने हिंदू धर्म और दर्शन का और भी गहन अध्ययन-चिंतन किया। अपने समय के वे अधिकारी भारतीय दार्शनिक रहे हैं।

सन् १९०९ में जब बर्लिन में विश्व धर्म सम्मेलन हुआ तो भारत से भी प्रतिनिधि भेजे जाने का निश्चय किया गया। उस समय विश्व सम्मेलन के भारतीय संयोजकों ने अपने प्रतिनिधियों के रूप में टी० एल० वास्वानी को ही सर्वाधिक योग्य समझा और उन्हें ही भेजा गया। यद्यपि उस समय उनकी आयु तीस वर्ष मात्र थी। अन्य देशों के प्रतिनिधियों में उनका बाह्य व्यक्तित्व भी काफी हलका था। जब उन्होंने धर्म सम्मेलनों में भारतीय तत्त्वज्ञान और धर्म पर सारगर्भित भाषण दिया तो वे सभी प्रतिनिधियों में अद्वितीय बन गए। श्रोताओं तथा आयोजकों पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनका अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा। यूरोप भर में उनका यश चतुर्दिक फैल गया। संसार भर के समाचार-पत्रों ने उनको सबसे छोटा किंतु सबसे अधिक प्रतिभाशाली दार्शनिक कहा। वस्तुतः आयु का मनुष्य की योग्यता, ज्ञान और बौद्धिक विकास से कोई संबंध है ही नहीं। हमारे पौराणिक इतिहास में एकलव्य, अभिमन्यु, प्रहलाद, शुकदेव, अष्टावक्र आदि प्रतिभाओं तथा विद्वानों ने अल्पायु में ही अपने क्षेत्र में प्रगति कर ली थी।

जो लोग अभी उम्र ही क्या है—यह कहकर अपने बच्चों की प्रतिभा को उपेक्षित और विशेषताओं को निरुत्साहित करते हैं—वे सचमुच ही गलती पर हैं। टी० एल० वास्वानी की इस सफलता को प्रेक्षकों ने शिकागो धर्म-सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद की घटना की पुनरावृत्ति कहा। संसार के कई देशों ने उन्हें अपने यहाँ भाषण देने के लिए निमंत्रित किया। भारतीय संस्कृति की दिग्विजय यात्रा से लौटकर टी० एल० वास्वानी लाहौर कॉलेज में प्राचार्य हो गए। बाद में वे कूच विहार कॉलेज में भी प्रिन्सीपल रहे।

माँ का देहांत हो जाने के बाद वे अपनी माँ की अंतिम इच्छा पूरी करने की ओर केंद्रित हुए। उस समय की सर्वोपरि देशसेवा यह लगी कि ऐसा वातावरण तैयार करने में सहयोग दिया जाय, जिसमें राष्ट्र के करोड़ों जन अपने जन्मसिद्ध अधिकार को समझ सकें और उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करें। बिहार कॉलेज से वे वापस सिंध क्षेत्र में लौट आए। उस समय वहाँ स्वराज्य आंदोलन की आँधी तो क्या मंद बयार भी नहीं चली थी। देशभर में महात्मा गांधी के सत्याग्रह की हवा बह रही थी, सिंध प्रांत उससे अछूता ही था। टी० एल० वास्वानी जी ने सिंधवासियों को अपनी लेखनी और वाणी दोनों से इस दिशा में उकसाया। स्वयं भी सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेकर ब्रिटिश नौकरशाही के खिलाफ आवाज बुलंद की। लोगों में स्वतंत्रता और राष्ट्रीयता की भावनाएँ जाग्रत कीं। अंगरेज सरकार ने वास्वानी को बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़ी विपत्ति और शत्रु के रूप मे देखा। उन्हें तुरंत गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

राष्ट्रीयता की आँधी जब चल निकली तो वास्वानी देश की आत्मा की ओर देखने लगे। उन्हें विश्वास था कि जागरण और क्रियाशीलता की वर्तमान स्थिति में भारतीय जनता को अपना अधिकार प्राप्त करने से दुनिया की कोई भी शक्ति नहीं रोक सकेगी। वास्वानीजी ने इस संभावना के बाद के लक्ष्य पर अपनी दृष्टि स्थिर की। उनके सामने दु:ख और दैन्य की पीड़ा से कराहता भारत का चित्र घूम गया। बेशक स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद देशवासियों को अपने भाग्य निर्माण का हक मिल जाएगा। परंतु यह कार्य पूरा किस आधार पर होगा, किसी भी राजनेता के सम्मुख अभी यह प्रश्न विचारणीय रूप में नहीं उठा था।

सृजनशील मस्तिष्क ने निर्णय दिया कि विदेशी दासता से खंडहर बने भारतीय समाज का नया स्वरूप एक नए आधार पर ही तैयार किया जा सकता है। और उसके लिए अभी से प्रयत्न किए जाएँ तो ही वह महल बन सकेगा अन्यथा एकदम मुक्त और स्वतंत्र हुआ जनमानस नई स्थिति और शक्ति प्राप्त करते ही लड़खड़ा जाएगा। बीमार और रोगी मनुष्य को पूर्ण आहार एकदम नहीं पचता, उसके लिए रोग, चिकित्सा और पथ्य ही आवश्यक है। चिकित्सा के रूप में राष्ट्रीयता का भाव और पथ्य के लिए दुरवस्था को दूर करने वाला समग्र शिक्षण।

उस समय भले ही उनके शिक्षण का उद्देश्य फलित न हुआ हो परंतु वह देश के नए कायाकल्प का आधार तो बनना ही था। साधु वास्वानी ने भारतीय जनता के शिक्षण का विचार कार्यरूप में परिणत करने के लिए उत्तर प्रदेश राजपुर में शांति आश्रम की स्थापना की। शांति आश्रम की व्यवस्था और दिनचर्या का नियोजन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने अध्यात्म और संस्कृति की गौरव गरिमा तथा आदर्शों को दृष्टिगत रखते हुए किया। राजपुर का यह आश्रम काफी लोकप्रिय हुआ, महात्मा गांधी. डा० राजेंद्र प्रसाद, पं० नेहरू आदि महापुरुषों ने आश्रम जीवन को देखा और सराहा था।

कालांतर में वास्वानीजी पुन: सिंध को चले गए और वहाँ पर मीरा संस्था की स्थापना की। इस संस्था की शाखाएँ प्रांत भर में फैल गईं। वास्वानीजी ने मीरा के पदों से लोगों में धार्मिक आस्था को जाग्रत किया। कलम और वाणी से सेवा तथा प्रेम का व्यावहारिक स्वरूप समझाया। देश के नवनिर्माण की उन्होंने एक ऐसी पृष्ठभूमि तैयार की जिसे यदि मूर्तरूप दिया जा सकता तो आज भारत का स्वरूप ही कुछ और होता।

सन् १९३३ से ४७ तक मीरा शिक्षण संस्था की शाखाओं का जाल बिछ गया। इस संस्था की शाखाओं में विद्यार्थियों को शारीरिक नैतिक, बौद्धिक और मानसिक रूप से सशक्त समर्थ और आत्मनिर्भर बनाने के लिए तैयार किया जाता था। नियमित अनुशासित और व्यवस्थित दिनचर्या में विद्यार्थी अपनी दैनिक आवश्यकताओं के संबंध में स्वावलंबी तथा चरित्र गठन में आत्मसम्मानी और दृढ़ बनता था।

टी० एल० वास्वानी ने भी लोकरुचि और श्रद्धा को ध्यान में रखते हुए काषाय धारण कर लिए थे। कृष्ण रूप में भारत का ग्वालबाल और मजदूर किसान से लेकर राजपुरुष तक उनका आराध्य बन गया। पुनर्निर्माण का स्वप्न किसी व्यक्ति या वर्ग विशेष से तो पूरा नहीं होना था। उसके लिए तो भारत का जन-जन उपास्य बनाना था।

सन् १९४७ में देश आजाद हुआ। राजनेताओं की समझौतावादी नीति और तत्पर उत्सुकता ने भारत को तीन टुकड़ो में बाँट दिया, विभाजित पंजाब, सिंध और बंगाल में धर्मोन्मादी दूसरे धर्मानुयायी के रक्तपिपासु बन गए। कल तक जो अति आत्मीय पड़ोसी-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वजन था, वही एक रात में अकारण बैरी बन गया। मुस्लिम बहुत क्षेत्रों से हिंदू लाखों की संख्या में अपनी संपत्ति स्वजन छोड़कर भाग आए। उस समय साधु वास्वानी ने लोगों को सांत्वना देने, धैर्य बँधाने और सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाने के लिए अपूर्व साहस तथा शौर्य का परिचय दिया।

अंततः साधु वास्वानी को भी सिंध छोड़ देना पड़ा। कुछ मास तक मुंबई में रहकर पूना आ गए और यहीं अपना स्थायी निवास बना लिया। स्वातंत्र्योत्तर काल में जिस स्थिति की उन्हें आशंका थी, प्रकारांतर से वही होने के कारण वे कुछ समय तक निराश अवश्य रहे। व्यथा-वेदना जब कुछ कम हुई तो उन्होंने बीती सो बीती प्रयत्न करना ही धर्म है— यह सोचकर पुनः मीरा शिक्षण संस्था का दूसरा सत्र आरंभ किया। १९४८ में मीरा शिक्षण केंद्र का पूना में उद्घाटन हुआ। यह संस्था बड़ी लोकप्रिय हुई।

उन्होंने मीरा नामक पत्रिका भी निकाली। इस पत्रिका में तत्त्वज्ञान, अध्यात्म, धर्म और संस्कृति के तथ्यों को प्रभावपूर्ण सरल और सुबोध ढंग से उद्घाटित किया जाता था। १६ जनवरी १९६६ को उनका देहांत हो गया। जीवनभर चतुर्दिक अपने व्यक्तित्व का सौरभ बिखेरकर मरुस्थल में पैदा हुआ—विपन्न परिस्थितियों में जन्मा यह फूल मुरझा गया, परंतु अपने चारों ओर सौंदर्य की सृष्टि करने के बाद।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सन्यास जीवन के सार्थक प्रयोक्ता—स्वामी केशवानंद

पंद्रह-सोलह वर्ष के एक अनाथ किशोर ने अपने हम उम्र बच्चों को पढ़ते-लिखते देखा तो स्वयं भी पढ़ने की इच्छा हुई, उस समय किशोर गायें चराने का काम किया करता था। पिता पहले ही चल बसे थे—छह वर्ष की आयु में माँ भी उसी राह पर चल दी। घर में अकेला रह गया किशोर पेट पालने के लिए गाँव वालों के गाय, भेंस, बछड़े, बछड़ियाँ चराने लगा।

विद्याध्ययन की इच्छा के बलवती होने पर किशोर ने अपना जन्म स्थान छोड़ दिया और इधर-उधर भटकने लगा। देश में तो स्कूलों की ही भरमार थी। ऐसी शिक्षण संस्था कहाँ मिलती जो विद्यार्थी के भरण-पोषण का भी दायित्व निभाए। विद्या की प्यास लेकर किशोर यत्र-तत्र भटकता रहा और पंजाब के फाजिल्का क्षेत्र में जा पहुँचा।

यहीं संयोग से महंत कुशलदास जी के संपर्क में आया और शिक्षाप्राप्ति के लिए साधु बन गया। महंत कुशलदास ने उन्हें नाम दिया—केशवानंद। साधु बनने का प्रस्ताव उनके गले तो नहीं उतरता था परंतु विद्या के प्रति प्रेम इस दीक्षा को स्वीकार करने के लिए विवश कर रहा था।

शिक्षा प्राप्त करने के लिए साधु वेश ग्रहण कर केशवानंद जी पढ़ने लगे। कई महीने तक परिश्रम करने के बाद भी वे थोड़ा सा ही ज्ञान प्राप्त कर सके। इसका कारण उनमें लगन और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्ययनशीलता का अभाव नहीं था, वरन योग्य शिक्षक की कमी थी। फाजिल्का के आश्रम में वे कोई खास शैक्षणिक प्रगति नहीं कर सके इसलिए वे १९०५ में इलाहाबाद चले आए।

उस वर्ष प्रयाग में कुंभ का मेला लगा था। केशवानंद जी ने साथी साधु-महात्माओं के सामने अपना विचार और इच्छा व्यक्त की। संत महात्माओं ने उन्हें हरिद्वार के गुरुकुलों में जाने की सलाह दी। सबकी सलाह से वे कुछ दिनों के लिए हरिद्वार रहकर पढ़ते रहे और बाद में अमृतसर चले आए। वहाँ एक आश्रम में रहकर उन्होंने संस्कृत का साधारण ज्ञान प्राप्त किया। अब उन्हें स्वयं ही अध्ययन करने की योग्यता पर विश्वास हो गया था।

सन् १९०८ में उनके गुरु स्वामी कुशलदास जी का देहांत हो गया। स्वामीजी के सभी शिष्य साधुओं में केशवानंद जी ही अधिक पढ़े-लिखे थे, इसलिए उन्हें ही आश्रम के अधिपति पद पर बिठाया गया। अभी तक तो स्वामी केशवानंद अपने ही विकास की बात सोचते थे। उन्हें जब महंत बनाया गया तो इस पद की गौरव-गरिमा को समझकर उसे सार्थक बनाने का विचार भी स्वाभाविक ही जन्मा।

स्वामीजी ने साधु पद के महान उत्तरदायित्व को समझा। यह जीवन अकर्मण्य बनकर—समाज पर भाररूप बनकर पूजा-पाठ करने के लिए ही नहीं अपनाया जाता है, वरन इसकी एक महान जिम्मेदारी है, जो सामान्य व्यक्ति से कहीं अधिक सेवा करने के उत्तरदायित्व का बोध कराती है। साधु और संन्यासी जीवन की यही आदि परंपरा है। जिसे आज का साधु समाज अपनाना तो दूर उसे समझना भी नहीं चाहता। उन्हें तो केवल आश्रम में रहकर आराम से खाना-पीना और मौज-मजे करना ही अच्छा लगता है। केशवानंद जी ने इस लीक से हटकर कुछ करने का निश्चय किया।

और लोग साधु की महान परंम्परा निभाएँ या न निभाएँ मुझे तो उस कर्त्तव्य का पालन करना ही है। इस निश्चय के साथ उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सेवाक्षेत्र तलाश किया। उन्होंने स्वयं के जीवन में अशिक्षा और अज्ञान का दुष्परिणाम भोगा था। आज भी भारत की अधिकांश जनता निरक्षर ही है। शिक्षा और ज्ञान का लाभ सामान्य से सामान्य व्यक्ति को भी मिलना चाहिए। इस विचार से उन्होंने अपने आश्रम में एक पुस्तकालय खोला अन्य साथी साधु-महात्माओं को ज्ञानार्जन कर समाजसेवा की दिशा में प्रेरणी दी। कुछ दिनों बाद उन्होंने आश्रम में ही एक संस्कृत पाठशाला भी खोली।

दो वर्ष तक सफलतापूर्वक स्थानीय प्रयास चलाकर स्वामी केशवानंद देश यात्रा के लिए निकल पड़े। इस यात्रा का उद्देश्य था—देशवासियों की स्थिति का निरीक्षण और सेवा करने योग्य क्षेत्र की तलाश। उन्होंने पाँच-सात वर्ष तक देशभर का भ्रमण किया और देखा कि सर्व साधारणजन अभाव, गरीबी, अशिक्षा, दासता तथा अन्य कई प्रकार की समस्याओं का शिकार बने हुए हैं। इन समस्याओं के निराकरण के लिए उन्होंने दो ठोस और अचूक उपाय ढूँढ़ निकाले—स्वतंत्रता आंदोलन और शिक्षा का प्रचार।

अबाध—सामाजिक विकास और राष्ट्रोत्थान में सबसे बड़ी बाधा थी— विदेशी-दासता। संसार के कई देशों का इतिहास पलटकर उन्होंने पाया कि पराधीन राष्ट्रों ने किसी क्षेत्र में प्रगति नहीं की है। स्वराज्य और स्वतंत्रता राष्ट्रीय प्रगति की मूलभूत आवश्यकता है। इसलिए केशवानंद जी स्वाधीनता संग्राम में भी कूद पड़े।

इसके पूर्व सन् १९२० में उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा के नाम से एक उत्साही युवकों का दल तैयार किया था। जो मात्र साक्षरता ही नहीं, अध्ययन और ज्ञान-वर्द्धन की प्रवृत्तियों को भी प्रोत्साहित करता था। इस दल का एक पुस्तकालय भी था, जहाँ चुनी हुई विचारोत्तेजक देश-विदेश की मूल और अनुवादित कृतियाँ रखी हुई थीं। स्वामीजी इस दल की गतिविधियों के साथ-साथ असहयोग, आंदोलन में भी भाग लेने लगे थे। इस कारण उन्हें जेल भी जाना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पड़ा। लंबे समय तक कारावास में रहने के कारण नागरी प्रचारिणी सभा की व्यवस्था विश्रृंखलित हो गई।

जेल से छूटने पर उन्होंने अपनी संस्था की यह दशा देखी तो बड़ी निराशा हुई। युवकों द्वारा सभा के पुस्तकालय की सभी पुस्तकें आश्रम में जमा करवा दी गईं थी। स्वामीजी ने इन नई परिस्थितियों की प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न हुई निराशा पर तुरंत काबू पा लिया और एक नए पुस्तकालय की स्थापना की गई। अबकी बार वाचनालय अपने निजी मकान में बनवाया गया था। स्थायी रूप से यह लाइब्रेरी चलती रहे इसके लिए उन्होंने वाचनालय, भवन और जमीन आदि सब हिंदी साहित्य सम्मेलन के नाम से कर दी। इसका आशय यह नहीं कि वे वाचनालय के सभी उत्तरदायित्वों से मुक्त होना चाहते थे। बल्कि वे तो अब अगला कदम उठाने का विचार कर रहे थे।

सन् १९२६ में स्वामी केशवानंद द्वारा संस्थापित अवोहर-साहित्य सदन कार्यशील हो गया। अच्छी पुस्तकों और साहित्यिक कृतियों की आवश्यकता हर काल में रहती है। महापुरुषों के विचार व्यक्तित्व का सान्निध्य लाभ हर कोई आसानी से उठा सके, इसके लिए पुस्तकालय भी अति उपयोगी होते हैं। मात्र शिक्षित होना ही पर्याप्त नहीं है। प्राप्त शिक्षा के प्रकाश में अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्धारण कर उनका निष्ठा-पूर्वक पालन करना ही शिक्षा की सार्थकता है। पुस्तकालय इस दिशा में भारी सहायक सिद्ध होते हैं। शिक्षितों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति के साथ-साथ अशिक्षितों में शिक्षा की भी एक अप्रत्यक्ष प्रेरणा जागती है।

स्वामी जी का अगला कदम था— शिक्षा का प्रचार। बिना पढ़े-लिखे लोगों को सद्ज्ञान और अपने अस्तित्व, महत्त्व तथा मूल्य से परिचित कराने का एकमात्र उपाय शिक्षा ही तो है। मनुष्य और पशु के अंतर को स्पष्ट करने वाली बौद्धिक चेतना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा के माध्यम से ही तो विकसित होकर उसके गौरव के अनुरूप जीवन की प्रेरणा देती है। इसके लिए उन्होंने अपना प्रथम प्रयास राजस्थान के एक ऐसे गाँव में किया, जहाँ मीलों के क्षेत्र में एक भी विद्यालय नहीं था।

सन् १९१६ में स्वामीजी ने राजस्थान के सर्वाधिक पिछड़े क्षेत्र संगरिया में एक छोटा सा स्कूल खोलने का निश्चय किया। उस समय उनके पास न तो सहयोगियों की कोई सेना थी और न ही अर्थशक्ति। साधनों के नाम पर उनके पास केवल संकल्प बल था। जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी मनुष्य को अजेय और सफल बनाता है। इस शक्ति के बल पर ही वे अत्यल्प सामर्थ्य और साधनों से अपना लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में बढ़े।

कोई व्यक्ति एकाकी ही परमार्थ प्रयोजनों के लिए जुटता है तो अन्य कई और भी उत्साही लोग उसके सहयोगी और अनुयायी बनकर आगे आते हैं। स्वामी केशवानंद जी ने एक टूटे मकान में जैसे ही अपनी छोटी सी पाठशाला खोली तो गाँव के लोगों ने पर्याप्त सुविधा साधन जुटाने का उत्साह दिखाया। गाँव के ही एक स्थानीय व्यक्ति ने चौदह बीघा जमीन विद्यालय भवन के लिए दान कर दी। वहीं के निवासियों ने दौड़धूप कर इमारत बनवाने के लिए चंदा एकत्रित किया और स्कूल खुलने के एक वर्ष बाद ही विद्यालय का निजी भवन तैयार हो गया।

तत्कालीन सामाजिक कुरीतियाँ भी उनके मार्ग में बाधा बनकर आईं। स्वामीजी सभी जाति के बच्चों को अपने विद्यालय में प्रवेश देते थे। यह बात ऊँच-नीच का भेदभाव मानने वाले पंडितों और रूढ़िवादी ग्रामवासियों को अच्छी नहीं लगी। उन्होंने अपने बच्चों को स्कूल भेजना बंद कर दिया और इस विद्यापीठ को ढेड़ियों (चमारों) का स्कूल कहकर बहिष्कृत करने लगे। स्वामीजी इस विरोध और असहयोग से अप्रभावित रहकर लोगों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को अपने पक्ष में करने के लिए यत्नशील रहे। जनमानस में सही दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास कभी निष्फल नहीं जाता। स्वामीजी को भी अंततः सफलता मिली ही। शीघ्र ही ग्रामीण कठमुल्ला पंडितों के अनुचित तर्कों और आदेशों को अमान्य करने के लिए तैयार हो गए।

सेवा कार्यों के सत्परिणाम की प्रतीक्षा धैर्यपूर्वक ही करनी पड़ती है। उतावली और तत्काल प्रगति की बात लोकसेवा के क्षेत्र में तो नहीं ही बनती, ग्रामवासियों का विरोध शांत हो जाने के बाद संगरिया स्कूल का कार्यक्षेत्र बढ़ने लगा। यह प्रतिकूल परिस्थित मानो स्वामी जी तथा उनके सहयोगियों की परीक्षा लेने आई थी। धैर्य, लगन एवं निष्ठा के बल पर वे इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और इसके पुरस्कार में संस्था विकास की दिशा में अग्रसर होने लगी।

१९२५ तक विद्यालय में १२० छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। संगरिया क्षेत्र में संस्थान की १२ शाखाएँ कार्यरत हो गई थीं। कार्यक्षेत्र बढ़ जाने पर आर्थिक साधनों की भी आवश्यकता हुई। संस्था के पास आय का कोई स्रोत तो था नहीं। सारा कार्य ग्रामवासियों के सहयोग से चलता था। एक बार अर्थाभाव के कारण विद्यापीठ बंद हो जाने की नौबत आई। बड़ी मुश्किल से स्थिति को टाला जा सका। गाँव के प्रतिष्ठित तथा संपन्न लोगों ने इस अवसर पर अगाध सहयोगी भाव का परिचय दिया और घर-घर से चंदा एकत्रित कर स्कूल चलाया।

सर्व साधारण को इतना गहन प्रभावित करने की शक्ति स्वामीजी के उस व्यक्तित्व में थी, जो व्यर्थ के बाह्याडंबर और शान-शौकत से कोसों दूर था। सादगी और सज्जनता ही मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावोत्पादक बनाते हैं न कि लच्छेदार भाषण और स्वयं को विशिष्ट बनाने की झूठी महत्त्वाकांक्षा, अपने लिए—साधारण सी आवश्यकताओं के लिए ही धन का प्रयोग तथा सेवा कार्यों में सही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थान पर समुचित व्यय। इस नीति ने स्वामी जी को लोकाराधन का पात्र बना दिया। बीमार रहने पर भी वे मूल्यवान पथ्य और अनाप-शनाप औषधियाँ नहीं लेते थे। कोई आगंतुक व्यक्ति जबरन इसलिए कुछ दे भी जाता तो उसे भी दीन-हीन छात्रों के लिए खरच कर देते।

शिक्षा प्रसार के साथ शिक्षापद्धति में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का श्रेय उन्हें प्राप्त है। मात्र किताबी ज्ञान को महत्त्व देने वाली संस्थाएँ ही उन्होंने खड़ी नही कीं वरन जीविकोपार्जन और उद्योग शिल्पों का प्रशिक्षण देने की उन्होंने संस्थाएँ भी खोलीं। सन् १९४४ से उनके विद्यापीठ में शिल्प और उद्योग धंधों को भी पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया गया। ज्ञान, व्यवहार और निर्वाह की सर्वांग शिक्षापद्धति के कारण कई युवक इस विद्यापीठ में भरती हुए। अगले चार वर्षों में दो हजार से भी अधिक छात्रों ने वहाँ शिक्षा प्राप्त की और सीधे जीवन क्षेत्र में तैयारी के साथ प्रवेश किया। अब तो इस विद्यालय में कई रचनात्मक कार्य बिना किसी बाहरी सहायता के संपन्न होने लगे हैं।

संसद में पहुँचकर स्वामी जी देशभक्ति एवं जनसेवा के सिद्धांतों के लिए अंतिम समय तक संघर्ष करते रहे। शिक्षा जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाले स्वामी केशवानंद का देहांत १३ सितंबर १९७२ को हुआ। स्वामी केशवानंद साधु की महान और गौरवशाली परंपरा मर्यादा के आदर्श प्रतीक थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्रांतिकारी संत—गुरु नानक

गुरु नानक का जन्म ऐसे समय में हुआ था जब नैतिक मूल्यों का पतन हो चुका था और सामाजिक स्थिति छिन्न-भिन्न होने लगी थी। पंडित और मौलवी दोनों ही अपने धर्मानुयायियों को गुमराह कर रहे थे। धर्म बाह्य दिखावा और निर्जीव कर्मकांड तक सीमित रह गया था। अंधविश्वास और कुपरंपराओं से ग्रस्त विभिन्न जातियाँ एकदूसरे के विरुद्ध कार्य कर रही थीं। आंतरिक कलह ने मानव जीवन को अशांत और असंतुष्ट कर रखा था।

देश की छोटी-छोटी रियासतें परस्पर लड़कर अपनी शक्ति को बरबाद कर रही थीं। लोदी साम्राज्य के अंतिम चरण में भ्रष्टाचार और बेईमानी पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी थी। बाबर भारत पर आक्रमण करने में सफलता प्राप्त कर चुका था। ऐसी विकट परिस्थितियों के मध्य गुरु नानक ने यह अनुभव किया—जब तक देशवासियों को मानव धर्म की शिक्षा नहीं दी जाती, जाति और लिंग-भेद के मध्य समानता की स्थापना नहीं होती, लोगों को कुपरंपराओं और गलत रीति-रिवाजों से मुक्त नहीं किया जाता, तब तक समाज और राष्ट्र को जाग्रत करना संभव नहीं है।

गुरु नानक ने देखा कि थोथे उपदेशों से समाज का कोई सुधार होने वाला नहीं है। इसलिए उन्होंने कोरे उपदेश के स्थान पर व्यवहार द्वारा प्रशिक्षण देने का क्रम अपनाया। उनके जीवन की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों और मिथ्याडंबरों का खंडन ही नहीं किया वरन जड़ मूल से उखाड़ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का पूरा-पूरा प्रयास किया। मध्यकालीन संत परंपरा के अधिकतर संतों ने मातृ शक्ति की घोर निंदा की है और नारी को नरक की खान बताकर धर्म के मार्ग में बाधक बताया। पर नानक ने उन नारी-निंदकों की कसकर खबर ली और अपनी ओजस्वी वाणी में नारी की महत्ता को प्रतिपादित किया—

भंडि जमीए भंडि निमीए
भंडि भंर्गाणे—विआहु।
भंडहु वेद सती भंडहु चले राहु।
सकिउ मंदा आखिर जितु भंडहि राजन।
भंडहु ही अपने भंडे बाझु न कोई।

अर्थात स्त्री से मनुष्य का जन्म होता है। उसी से विवाह होता है। इस प्रकार सृष्टि का क्रम स्त्री से ही चलता है। यह राजा तक को जन्म देने वाली है फिर उसके महत्त्व को कम क्यों समझा जाय?

सामाजिक विकास को अवरुद्ध कर एकता को तिरोहित करने वाली जाति प्रथा पर भी उन्होंने करारा प्रहार किया। उन्होंने सबके सम्मुख स्पष्ट शब्दों में कहा—"जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी से अनेक प्रकार के बरतन बनाया करता है, उसी तरह ईश्वर ने पाँच तत्त्वों से मानव शरीर बनाया है, फिर ऊँच-नीच का भेदभाव क्यों? सांसारिक व्यक्तियो! तुम्हें जाति का गर्व नहीं करना चाहिए इससे अनेक प्रकार के बखेड़े उत्पन्न होते हैं।"

उनके लिए न कोई हिंदू था और न मुसलमान, वे तो केवल मानवता के उपासक थे। उनकी दृष्टि में सभी धर्मावलंबी समान थे। मरदाना नाम के मुसलमान ने उनकी शिष्यता ग्रहण की थी और आजीवन उनके साथ रहा। जब वे सुल्तानपुर में थे तब एक फकीर वहाँ से जाते समय अपना निवास उन्हें प्रदान करने का प्रस्ताव करने लगा तो नानक ने तुरंत उत्तर दिया—"निवास पर उसी व्यक्ति का अधिकार होना चाहिए जो बेघर है।" उनका यह कथन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्तमान समस्या के संदर्भ में कितना औचित्यपूर्ण प्रतीत होता है। जब देश में करोड़ों व्यक्ति भूमिहीन और घरहीन हैं।

गुरु नानक को गरीबों के साथ रहने में विशेष आनंद आता था। उन्होंने मलिक भागों जैसे अमीर व्यक्ति की अपेक्षा लालो नामक एक सामान्य व्यक्ति का आतिथ्य स्वीकार किया था। जब वे सुल्तानपुर के अनाज भंडार में किसी उत्तरदायी पद पर कार्यरत थे तो कितने ही गरीबों की आर्थिक सहायता करते रहते थे। वे दूसरों के अधिकारों को हड़पने के सख्त विरोधी थे। वे सादा जीवन व्यतीत करते थे और सरल भाषा बोलते थे। उन्हें आडंबर किसी भी तरह का पसंद न था। उनके सबद, इतने सरल हैं कि कोई अशिक्षित व्यक्ति भी आसानी से समझ सकता है। उनकी भाषा दार्शनिक ऊहापोहों और तर्क-वितर्कों से मुक्त है। यदि अपने देश की भाषा नीति निर्धारण में उनके संदेश को ग्रहण कर सके तो काफी समस्या हल हो सकती है।

नानक देव सामाजिक जीवन में समानता के समर्थक थे। उन्होंने अपने इस आदर्श को लंगर के रूप में सबके सामने रखा था। इसमें बिना किसी भेदभाव के सभी लोग भोजन कर सकते थे। इससे परस्पर सद्भाव और सामूहिकता में वृद्धि हुई। वे सबका भला चाहते थे। गांधीजी ने सामाजिक और आर्थिक विकास के रूप में जिस 'सर्वोदय' सिद्धांत की स्थापना की, वह नानक के 'सरवत्त का भला' में देखने को मिलता है। उनकी यह शिक्षा राष्ट्र की अनेक समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकती है।

हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि वे चरित्र निर्माण के लिए आंतरिक पवित्रता को अधिक आवश्यक मानते थे। उन्होंने सेवा और प्रेम के एक व्यावहारिक धर्म का उपदेश दिया। उनकी अधिकतर शिक्षाएँ 'जप जी' नामक गीत में बड़े सुंदर ढंग से प्रस्तुत की गई हैं। इसे सर्व प्रसिद्ध रचना स्वीकार किया गया है। विद्वानों का यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहना है कि नानक और कुछ भी न होते फिर भी इस रचना के प्रणेता होने के कारण अमर रहते। मुसलमानों में कुरान को और ईसाइयों में वाइबिल को जो गौरव प्राप्त है, वह सिख समाज में 'जप जी' को है। मध्यकाल में अधिकांश नर-रत्नों द्वारा समाज निर्माण के लिए जो संदेश दिए गए थे, वे कविता में ही थे। नानक ने भी कविता का आश्रय लिया था। जनसाधारण की जिस भाषा में उन्होंने काव्य का सृजन किया, वह अविकसित स्थिति में थी फिर भी उन्होंने समृद्ध बनाने के लिए विभिन्न बोलियों के शब्दों का उपयोग किया। पंजाब की चप्पा-चप्पा भूमि से तो वे परिचित थे ही इसके अतिरिक्त उन्होंने लाहौर, एमनाबाद, हरिद्वार, दिल्ली, मथुरा, आगरा, बक्सर, गया, पटना, बंगाल, गुजरात, सिंध और करांची तक पूरे देश का भ्रमण किया था। मक्का, मदीना, बगदाद, पेशावर, कंधार और बिलोचिस्तान आदि अनेक सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचकर अपनी अमृतमयी वाणी से लोगों को कृतकृत्य किया। इसलिए उनकी भाषा में अरबी, फारसी और खड़ी बोली के शब्दों का उपयोग देखने को मिलता है।

नानक देव सत्य को ही ईश्वर मानते थे। उनका विश्वास था कि ईश्वर का नाम स्मरण करने और उसकी स्तुति गाने से हमारी भक्ति भावना जाग्रत होती है। जिस प्रकार गंदे कपड़े साबुन और पानी से धुलकर साफ हो जाते हैं, उसी प्रकार प्रार्थना से मन के कलुष धुल जाते हैं। उन्होंने जनता को बताया कि वे अपनी भाषा में ईश्वर से सीधा संपर्क कर सकते हैं। पर कोरे शब्द जाल से काम नहीं चलता। इसके लिए भावना के समन्वय की भी विशेष आवश्यकता है।

आत्मा को परमात्मा के ध्यान में लगाने से मनुष्य की इच्छा परमात्मा के अधीन हो जाती है और फिर उसके सारे क्रिया-कलाप ईश्वर की इच्छा के अनुरूप ही चलते हैं। ईश्वरप्रदत्त स्वतंत्र इच्छाशक्ति मानव के लिए बहुत बड़ा वरदान है, उसके सम्मुख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्य और असत्य, पाप और पुण्य के मार्ग खुले रहते हैं। उसे मार्ग चयन की पूरी-पूरी छूट रहती है। यदि ऐसा न होता तो उसका जीवन एक स्वचालित यंत्र की तरह नीरस हो जाता। ऐसी स्थिति में वह न प्रतिष्ठा प्राप्त कर पाता और न महान बन पाता।

ईश्वर को समर्पित जीवन जीने वाले लोगों का व्यक्तित्व प्रभावशाली इसलिए है कि वे सामान्य मनुष्यों को प्राप्त अवसरों से लाभ उठाकर अपने को महानता की ओर ले जाते हैं और अपने चारों ओर के मनुष्यों से ऊपर उठ जाते हैं।

गुरु नानक के आगमन को भले ही पाँच शताब्दियाँ बीत गई हों, पर उनके संदेश शाश्वत हैं। आज के अज्ञानांधकार में भटकते मानव को उनके संदेश प्रकाश किरणों की तरह मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं और समाज तथा राष्ट्रीय कल्याण की भूमिका में सहायक हो सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संन्यास से गृहस्थ संन्यास की ओर

हरिद्वार के गंगातट पर बसे साधुओं के बीच कोई धनी संपन्न महिला पैसे बाँटती हुई निकली। दो बाबाजी बैठे बात कर रहे थे। स्त्री ने उनकी ओर दो सिक्के फेंके—एक इकन्नी का और एक दो आने वाला। बातों का क्रम तोड़कर साधुओं ने वे सिक्के लपककर उठा लिए। अलग-अलग दोनों के हिस्से में आए, एक के पास चार पैसे वाला और दूसरे के पास दो आने वाला।

दोनों में मतभेद हुआ। जिसे एक आना मिला था वह बाबाजी यह दावा कर रहा था कि उसने दो आने वाला सिक्का मेरी ओर फेंका था तथा दो आने वाले बाबाजी का कहना था कि यह सिक्का मेरी ओर फेंका गया था। इसी बात पर वे दोनों जोरों से चिल्लाने लगे और झगड़ने लगे। झगड़ा यहाँ तक बढ़ा कि चीमटों का प्रयोग होने लगा और एक बाबाजी का सिर फट गया। आस-पास के लोगों ने बीच-बचाव कर अस्पताल भेजा।

इस घटना को देख रहा था पास की कुटी में बैठा एक साधु। विचार मंथन चलने लगा। "क्या यही साधुता है। समाज के मार्गदर्शक कहलाकर हम धन-दौलत से अलिप्त रहने का संदेश देते रहते हैं, परंतु यहाँ छोटे से छोटे सिक्कों के लिए सिर फुटौबल की नौबत आ जाती है। संसार को मिथ्या बताने का उपदेश स्वयं अंगीकार कर सकना तो बात दूर की रही, उसके विपरीत आचरण कर साधु मर्यादा को भंग करना कहाँ का औचित्य है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधु की धर्मतीर्थ से हटकर चले जाने की इच्छा हुई और वह कुटी छोड़कर परिव्राजक जीवन बिताने के लिए निकल पड़ा। जगह-जगह घूमा, हर स्थान पर साधु और संत के नाम पर ढोंगी, पाखंडी, लालची और अनाचारी बाबाजियों से पाला पड़ा। लोग उसका भी परिचय पूछते—उत्तर मिलता स्वामी विद्यानंद। सभी बाबाजियों में से ही कोई एक होने के कारण लोग उपेक्षा कर मुँह फेर लेते।

विद्यानंद वाराणसी पहुँचे। मणिकार्णिका घाट पर एक श्रद्धालु गृहस्थ ने उन्हें अपने यहाँ ठहराया। पड़ोस में ही किसी महात्मा का प्रवचन चल रहा था। प्रभावोत्मादक ओजस्वी वाणी में महात्माजी लोगों को सद्शिक्षाएँ देते। सरल, सुबोध शैली में अध्यात्म का व्यावहारिक प्रतिपादन देखकर विद्यानंदजी की मान्यता टूटने लगी। सोचा सभी साधु एक जैसे थोड़े ही होते हैं। वे भी प्रवचन सुनने नियमित रूप से जाते और प्रवचनकर्त्ता महात्मा से बड़े प्रभावित हुए।

एक दिन महात्माजी प्रवचन करने नहीं आए, स्वामी विद्यानंद ने पता लगाया कि क्या कारण है तो मालूम हुआ वे महात्मा जिस परिवार में ठहरे थे, उसी की एक कुमारी कन्या का शीलभंग करने से पिटपिटाकर रात को चले गए।

स्वामी विद्यानंद के मन में अपने श्रद्धेय महात्मा के साथ ही साधु और संत के नाम से ही तीव्र घृणा हो गई। वे सोचने लगे इससे गृहस्थ क्या बुरा था? साधु का बाना ही विश्वास तोड़ देने वाला है। लोग साधु-महात्माओं की पोल जानते, यह आदर्श चरित्र का नहीं दुश्चरित्रता का ही प्रतीक मात्र रह गया है। वे वाराणसी से भी चल दिए। सैकड़ों सजातीय संतों से मिले। उनके बुरे स्वभाव, लोलुप दृष्टि और मिथ्या दंभ को देखकर ईश्वर भक्ति की जो जिज्ञासा थी, वह लुप्त हो गई। उनके हृदय में अंतर्द्वंद चलने लगा और अंततः वे इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि गृहस्थ जैसा सामान्य जीवनयापन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करते हुए संत जैसी सत्यप्रवृत्ति अपनाना वेशधारी साधु बाना पहने फिरने की अपेक्षा कहीं उत्तम है।

स्वामी विद्यानंद ने अपना साधु वेश छोड़ दिया और फिर से परिवार में आ गए। पत्नी बच्चों के हर्ष का पारावार नहीं रहा। स्त्री को अपना खोया सुहाग और बच्चों को अपने पिता का प्यार पुनः मिल गया। गाँव वालों में उपहास का दौरा आने लगा। तरह-तरह के व्यंग्य और ताने कसे जाने लगे। परंतु स्वामी विद्यानंद सब कुछ सहते रहे—मौन और मुस्कराकर। ऐसा नहीं कि उनके पास कोई उत्तर न रहा हो, वरन इसलिए कि कोई भी युक्तिपूर्ण उत्तर दिया जाय तो जो उपहास की दृष्टि से ही आलोचना करते हैं, उन पर क्या असर हो सकता है, विद्यानंद प्रतिवाद में मुस्करा भर देते।

यहीं उनके सामने समाजसेवा का एक नया आयाम आया। गाँव में कोई भी स्कूल नहीं था। बच्चे दिनभर मटरगश्ती या तीतर-बटेरों के पीछे गुलेल कंकड़ लेकर दौड़ते-फिरते। जीवन जीने के लिए जो शिक्षा और तैयारी आवश्यक होती है—उस ओर किसी का ध्यान तक नहीं था। गाँव से पंद्रह मील दूर एक कसबा था, दो-चार संपन्न घर के बच्चे ही पढ़ने जा सकते थे। विद्यानंदजी ने गाँव में एक पाठशाला खोलने का निश्चय किया। आरंभ में कुल तीन विद्यार्थी ही रहे । वे भी उन बच्चों में से थे जो गाँव से शहर पढ़ने जाया करते थे। विद्यानंदजी घर-घर जाते और शिक्षा का महत्त्व समझाते। जो लोग शिक्षण की थोड़ी आवश्यकता महसूस करते थे, वे तो अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तैयार हो जाते। परंतु जो इसे बिलकुल ही आवश्यक नहीं समझते, बेकार और व्यर्थ का ढकोसला मानते, वे विद्यानंद का उपहास उड़ाकर बात को टाल देते। यहाँ विद्यानंद की अनुकरणीय सहिष्णुता देखने में आई। अपने पूर्व जीवन से गृहस्थ में लौट आने के कारण उन पर किसने व्यंगोक्ति की है, विद्यानंद ने इस बात की ओर तो कोई ध्यान ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं दिया। वे ध्यान इसी बात का रखते कि मन में कोई प्रतिक्रिया तो नहीं होने लगी है। पूर्ववत् मुस्कान ही उनका प्रत्युत्तर था।

कोरा किताबी ज्ञान भी व्यर्थ है। यह बात उनके मस्तिष्क में पहले घुसी थी। अपने खेत पर ले जाकर बच्चों को प्रायोगिक और व्यावहारिक शिक्षण देना आरंभ किया। पेड़, पौधे ,सूर्य, चाँद, नदी आदि प्राकृतिक उपादानों का विस्तृत उल्लेख कर उन्होंने नई शिक्षण पद्धति निकाली तो विघ्नतोषी लोगों को विद्यानंद का विरोध करने का एक और बहाना मिल गया। विद्यार्थियों के अभिभावकों के पास जाकर उन्होंने बहकाना शुरू कर दिया कि विद्यानंद लड़कों से पढ़ाने के बहाने अपने खेतों पर काम करवाता है। अभिभावक असंतुष्ट होने लगे तो विद्यानंद ने समझाया कि यह बात निराधार है। वे बच्चों से काम नहीं लेते वरन उनको पढ़ाते हैं। परंतु उनके कान तो इस तरह भर दिए गए थे कि शंकाओं का निराकरण मुश्किल था। अत: विद्यानंदजी ने एक उपाय सुझाया कि बालकों के अभिभावकों की कृषिभूमि पर ही वे शिक्षा दिया करेंगे। अब शिक्षा भवन या मकान की अपेक्षा खुले आकाश के नीचे चलने लगी।

यह शिक्षा पूर्णतया नि:शुल्क दी जाती थी। विद्यानंद और उनके परिवार की जीविका खेती से चल जाती। अपनी मेहनत, त्याग और तपश्चर्या के बल पर उनकी शिक्षा योजना इतनी लोकप्रिय हो गई कि बाद में उसी विद्यालय को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बना दिया गया। आस-पास के गाँवों में घूम-घूमकर उन्होंने बहुत से स्कूल खुलवाए।

साठ वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया। बाहरी दुनिया से भिन्न होते रहने के लिए विद्यालय में पुस्तकालय चलाने का क्रम भी उन्होंने चलाया।

सन्यास की कक्षा से वे पीछे हटे नहीं, वरन सन्यास के साथ गृहस्थ धर्म को भी जोड़कर उन्होंने गृहस्थ सन्यास का एक ऐसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिमान स्थापित किया जो अध्यात्म और धर्म-साधना की ओर प्रवृत्त भावुक लोगों को दिग्भ्रांत होने से एक सीमा तक रोक सकने में सक्षम है।

बहुत से लोग यह कहते हैं कि संन्यास धर्म की कठोरता का निर्वाह न कर पाने के कारण वे उस कक्षा से लौट आए जिसमें उत्तीर्ण होना शूरवीरों का ही काम है, परंतु यह बात जितनी अत्युक्तिपूर्ण है उतनी ही उनके प्रति पक्षपातपूर्ण भी। वस्तुत: वे आज के उस सन्यस्त जीवन स्तर से बहुत अधिक-अधिक ऊंचे और महान उठ गए थे। उनके जीवन का प्रेरक मंत्र गीता का अनन्य शरणागति रहा है, जिसे महात्मा गांधी ने संन्यास की प्रथम कसौटी कहा है और वे इस कसौटी पर गृहस्थ में रहते हुए भी खरे उतरे।

मुद्रक, युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org